गाय और गौशाला

गाय, गौवंश, गौशाला, गऊधाम, पांजरापोल
और
गाय की अर्थव्यवस्था की उपयोगी जानकारी

संकलन : सोनल परीख

अनुवाद : हार्दिक वी. भट्ट

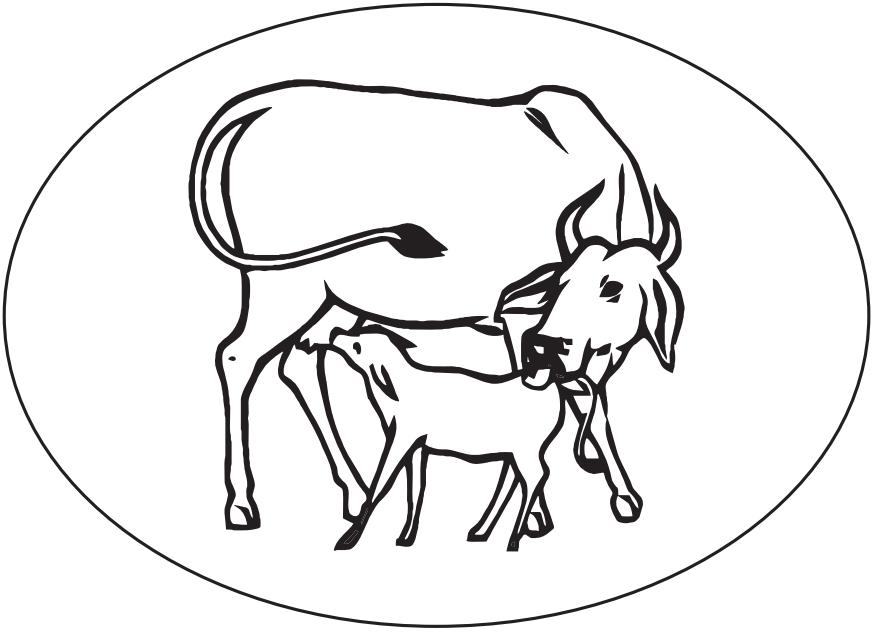

मुंबई सर्वोदय मंडल

यह पुस्तक " बॉम्बे गौ रक्षक ट्रस्ट "
की आर्थिक सहायता से प्रकाशित कि गई है।

प्रथम संस्करण, ५०० प्रतियाँ, नवंबर २०१९

प्रकाशक :
मुंबई सर्वोदय मंडल
२९९, ताड़देव रोड, नाना चौक,
मुंबई – ४०००० ७
दूरभाष : ०२२-२३८७२०६१
ईमेल : info@mkgandhi.org
वेबसाईट : www.mkgandhi.org

गाय और गौशाला

अनुक्रम

प्रस्तावना
१. गाय अर्थात कामधेनु
२. गाय : पहले और आज
३. गौवंशी का विकास कैसे होता है?
४. गौसेवा एवं गौवंश
५. गौवंश विकास अर्थात क्या?
६. गौवंश विकास किसलिए?
७. यांत्रिक विकास – गौवंश विकास
८. गाय पर औसतन खर्च और आय
९. गाय का दूध
१० गौमूत्र का उपयोग
११ पंचगव्य और उसके उपयोग
१२ गौमूत्र व गोबर : खाद का अनमोल ख़जाना
१३ गऊधाम – सर्वांगीण विकास का स्रोत
१४ गौशाला तथा औषधि निर्माण
१५ पांजरापोल को गऊधाम कैसे बनाया जाए?
१६ गाय को राष्ट्रीय पशु का सम्मान दें
१७ भारत की दुधारू गायें और बैल
१८ गाय के लिए शहरी नागरिक क्या कर सकते हैं?
१९ गाय के लिए कौन क्या कर सकता है?
२० गाय के बारे में बच्चों को क्या बताएँ?
२१ गौ-विज्ञान: पुनर्जीवित होती भारतीय विद्या
२२ गाय और काऊ
२३ गाय को समझो
२४ स्व वित्तपोषित गौशाला
२५ गौरक्षा के विषय में आचार्य विनोबा भावे के विचार
२६ गौरक्षा के विषय में गांधीजी के विचार
२७ प्रोजेक्ट जी.आई.आई.एस.टी.
२८ गौशालाओं की सूची
परिशिष्ट

प्रस्तावना

हमारे कृषि प्रधान देश में गायों को पालने की परंपरा रही है। भारत के ७० प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है। प्रत्येक परिवार के पास थोड़ी ज़मीन होती है तथा उनके यहाँ दूध देनेवाली गायों और शक्तिशाली बैलों का पालन होता है। यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है।

इस व्यवस्था में बीमार, अपंग, वृद्ध तथा अनाथ गौवंश की सेवा के लिए प्रत्येक गाँव में गौशालाएँ हुआ करती थीं। समाज के सेवाभाव के कारण गौशालाओं का निर्वाह भी अच्छी तरह से हो जाया करता था। वक्त पड़ने पर लोग गौशाला में दान भी करते थे। गाँव के पास गोचर ज़मीनें रहती थीं, जिससे पशुओं को उचित प्रमाण में चारा भी मिल जाता था। इस प्रकार कई वर्षों तक गौवंश एवं गौशालाएँ भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग रही हैं कृषि के साथ गौ-पालन भी लंबे समय तक भारत में महत्वपूर्ण व्यवसाय रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में जीवनशैली में तीव्र गति से बड़े परिवर्तन आए हैं। अनेक कारणों से गौपालन के विषय में साधनों एवं व्यवस्था में कटौती होती चली गयी लोग घर में गायों को पालते नहीं है तथा गौशालाओं के आस-पास रास्तों पर भटकते पशुओं को आश्रय देने के उचित व्यवस्था नहीं है। छत, भंडार, ख़ुराक-पानी, कर्मचारी आवास, कर्मचारियों के वेतन, बिजली जैसे अनेकों खर्च गौशालाओं की कमर तोड़ रहे हैं।

गाँवों में छोटी-छोटी गौशालाओं की स्थापना हो, स्थानीय स्तरों पर उसे आर्थिक सहायता प्राप्त हो और वे स्वावलंबी बनें ऐसे प्रयत्नों का होना आज बहुत ज्यादा ज़रूरी हो गया है। गौशाला सुंदर, सुघड़ एवं व्यवस्थापूर्ण हो यह सबके लिए गौरवपूर्ण है।

गौशाला गाय के लिए इसलिए उसमें गौमाता को संपूर्ण आहार, शुद्धजल, बीमार में इलाज की व्यवस्था, छाँव-पेड़ की सुविधा, वर्षा से सुरक्षा आदि मिले इसके अलावा गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के

लिए गोबर-गौमूत्र से जैविक खाद, दवाइयाँ तथा पंचगव्य से औषधि, साबुन, सौंदर्यप्रसाधन जैसी वस्तुओं का निर्माण हो साथ ही ऐसी संस्थाओं के पास चारा (हरी घास) उगाने हेतु ज़मीन होनी चाहिए। आजकल चारा उगाने के बदले कपास उगाया जा रहा है। या तो चारे की ज़मीन को अथवा उद्योंगो को बेचकर आमदनी बढ़ाने के गोरखधंधे बड़ी मात्रा में हो रहे हैं। इसका परिणाम मूक पशुओं को भुगतना पड़ता है अत: गौशाला जैसी संस्थाओं और उसके संचालकों को सर्वप्रथम पशुओं की सुरक्षा व स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए।

जिन मूक प्राणियों को सँभालने की ज़िम्मेदारी सरकार की है यदि उनको चारे अथवा इलाज के अभाव में दु:ख पहुँचे या उनकी मृत्यु हो जाए तो हम भी इस पाप के भागीदार बन जाते हैं तथा समाज व पशुओं के लिए विश्वासघाती बन जाते हैं । अत: प्रत्येक संस्थाओं या ट्रस्टो को गाय के विशेषज्ञ व गऊप्रेमियों को ही ट्रस्टी या वेतनदार के रूप में नियुक्त करना चाहिए।

संस्थाएँ गायों की कीमत लगाने के बारे में कभी न सोचें बल्कि गौ-उत्पादों का विकास कर स्वावलंबी बनें सरकारी सहायता के भरोसे बैठने की बजाय कुशलता से खर्च कम करने के लिए दानदाताओं से दान में पैसों के बदले चारे लें ऐसा क्यों नहीं हो सकता?

गाय के दूध, गौमूत्र और गोबर का कुशलतापूर्वक उपयोग कर ईंधन, विद्युत व औषधि का निर्माण करने के साथ-साथ तंदुरुस्त गायों को सँभालनेवाली जीवंत गौशालाओं के लिए संस्था, समाज और व्यक्ति अपना योगदान दे यह इस पुस्तक की प्रेरणा और प्रार्थना है।

इस पुस्तक को तैयार करने के लिए जिन-जिन पुस्तकों एवं वेबसाइटों की सहायता ली गयी है उनकी सूची पुस्तक के अंत में दी गयी है जिज्ञासु पाठक उसका उपयोग कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

- तुलसीदास के. सोमैया

१. गाय अर्थात कामधेनु

कामधेनु शब्द में ही गाय की उपयोगिता और उपकारिता निहित है। कामधेनु यानि मानव जाति की मनोकामना अर्थात ज़रूरते सात्विकता एवं संवेदना से पूर्ण करने का सामर्थ्य रखनेवाली, अनिष्टों को दूर करनेवाली, समस्याओं का निराकरण करनेवाली तथा भविष्य का आधार, कामधेनु यानि अर्थ, आरोग्य, अध्यात्म, ऊर्जा, सौंदर्य तथा पर्यावरण की आराध्यादेवी, यह वर्णन किसी स्वर्ग की कामधेनुओं का नहीं बल्कि भारतीय गायों का है। भारतीय गाय आज भी कामधेनु है यदि योग्यतापूर्ण देखभाल की जाए तो भारत के सात लाख गाँव में बसते प्रत्येक परिवार का पेट भरने और देश को अपने पैरों पर खड़ा करने में हमारा गोवंश आज भी समर्थ है। गोधन हमारे कृषिप्रधान देश का सच्चा धन है इस देश की समृद्धि कत्लखानों या कारखानों में नहीं बल्कि गोवंश आधारित कृषि में है गोधन का कत्ल बंद होने पर करोड़ों का नुकसान होगा ऐसी सोच रखनेवालों को नही पता कि गायों को बचाने से देश को उससे दसगुना अधिक फायदा होगा। आई.एम.एफ. और वर्ल्ड बैंक के लोन से देश को मुक्त करवाने की ताकत हमारे पशुधन में है।

ऋग्वेद कहता है कि गाय ऐश्वर्य है। यह सूत्र एक समय में भारत के प्रत्येक नगर में जीवंत था। गायों की सेवा से भारत समृद्ध एवं ऐश्वर्यवान था। स्वास्थ्य एवं समर्थ था। गो आधारित कृषि का एक विज्ञान था। हमारे रबारी, किसान और चारण यह विज्ञान जानते थे। गोवंश का कत्ल कर के जो प्राप्त किया जा सकता है। उससे कई गुना ज्यादा गोवंश को जीवित रख के पाया जा सकता है। यह समझने की आज ज्यादा जरूरत है।

एक सर्वेक्षण कहता है कि आज देश की ६५ प्रतिशत कृषि गोवंश द्वारा होती है। और उसमें सालाना २.४० करोड़ टन डीजल की बचत होती है, जिसकी अंदाजन कीमत ४०००० करोड़ रुपये है। दूसरे एक सर्वेक्षण के मुताबिक़ भारत की रेल का समग्र नेटवर्क जितने मुसाफिरों और माल का वहन करता है। उससे चार गुना ज्यादा मुसाफिरों और माल का वहन इस देश के पशु करते हैं।

" गोमये वसते लक्ष्मी " और " गौमूत्रे धनवंतरी " यह दोनों सूत्र याद रखने योग्य है सृष्टि के असंतुलित चक्र को संतुलित करने की ताकत गोवंश के गोबर एवं मूत्र में है।

अर्थ, आरोग्य, अध्यात्म, ऊर्जा, सौंदर्य और पर्यावरण की आधारशिला समान गौमाता के महत्त्व को समझे तो गौपालन, गौरक्षा और गौसंवर्धन से सर्वोन्नति को साधा जा सकता है। दुर्भाग्यवश यह बात हम समझे, उससे पहले अंग्रेज समझ गए और भारतीय समृद्धि की जड़े हिला कर रख दी। रमेशचंद्र दत्त ने " द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया" पुस्तक में लिखा है कि सन १८५७ से १९०० के मध्य में कुल १६,६७,०२,४२,८४०/- रु. की कीमत का चमड़ा यूरोप-अमेरिका के देशों में निकास किया गया था। उस ज़माने में एक गाय की कीमत दो रुपये और बैल की की कीमत ३.५ रुपये से ४ रुपये तक थी यदि हिसाब करे तो इस समय अंग्रेजों ने करोड़ों गाय-बैल-बछड़ों का कत्ल किया होगा। यह समझा जा सकता है उसके बाद बचे हुए गोवंश हमारी संजीवनी है यह समझना है।

अंग्रजों के आने के बाद हमारे देश में दो प्रकार की अर्थव्यवस्था बन गई है। एक देशी, एक विदेशी, एक रक्षक, एक भक्षक उसका परिणाम यह हुआ की उद्योगप्रधान देशों में प्रत्येक पशु के लिए दस से बारह एकड़ ज़मीन चरने हेतु होती है। जबकि कृषिप्रधान भारत में एक एकड़ ज़मीन में दस से बारह पशु चरते है। कुछ गावों में तो गोचर ही नहीं होते।

गोवंश आधारित व्यवस्था देशी और रक्षक है। गोवंश का कत्ल करके उसका मांस, चमड़ा विदेशों में भेज कर तथा हड्डियों और खून से दवाइयाँ बनाकर हमने अनेक उद्योग विकसित किए हैं। लेकिन गोवंश को जीवित रखकर भी अनेक उद्योगों को विकसित कर सकते है। विश्व का हर्बल मार्केट ५० हजार करोड़ का है उसमें भारत का हिस्सा मात्र ४ प्रतिशत है मात्र फेयरनेस क्रीम के उत्पादक १२००० करोड़ का व्यापार करते हैं । हमारे गौवंश के संवर्धन से दूध और दूध के उत्पाद, गौमूत्र और उससे बनता असाध्य रोगों की दवाइयाँ, गोबर गैस, ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर, ऑर्गेनिक पेस्टीसाइड, अमृत माटी, साबुन, सौंदर्य प्रसाधनों वगैरा-वैगेरा सैंकड़ों उद्योग विकसित किए जा सकते हैं। गाँव-गाँव में क्लिनिक खोलकर, गोर ऊर्जा दे कर आर्थिक

लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

संशोधक कहते है कि भारत के बाजारों में मिलनेवाले खाद्यपदार्थों में ५० प्रतिशत से ज्यादा कीटनाशक दवाइयों का प्रमाण पाया जाता है। इसमें अनाज, सब्जी, फल जैसे कृषि उत्पाद समाविष्ट हैं। ऐसे खाने के कारण बीमारियों का प्रमाण बढ़ा हैं गाय ऐसे तमाम रोगों को चुनौति दे सकती हैं आज से तीन वर्ष पहले आँखों में अर्क के अलावा कोई अन्य दवाई डालने पर एक जैन साध्वी ने कहा की वह लगभग अंध ही हो गयी थी। क्या होगा डॉक्टरों ने कहा कि दृष्टि वापस आने की संभावना नहीं है। परंतु गाय के घी के नश्य प्रयोग एवं गाय के घी का आँखों में अंजन करने के बाद दृष्टि वापस मिली। अंधत्व से लेकर व्यंधत्व तक के रोगों के इलाज के लिए गाय का घी उत्तम इलाज है। यह संशोधन से प्रमाणित हुआ है कि गाय और गौवंश चलता-फिरता औषधालय है ऐसा कहना जरा भी अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। इसीलिए कहते है कि गोमये वसते लक्ष्मी, गौमूत्रे धनवंतरी।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण ध्रुवीय प्रदेशों में बर्फ पिघलना और ओजोन की परत को भी नुकसान होने के कारण समग्र विश्व चिंताग्रस्त है गोवंश आधारित संस्कृति के मुताबिक यदि विश्व जिया होता तो पर्यावरण की गंभीर समस्याएँ खड़ी न होती।

गोवंश ऊर्जा का अटूट भंडार है। अणु ऊर्जा के लिए अमरिका से करोड़ों रुपयों का कर्ज लेकर अणु रिऐक्टरों को खरीदने की कोई जरूरत नहीं होती। गोबर ऊर्जा का विकास करके रसोई गैस, विद्युत वाहनों में उपयुक्त सी.एन.जी. को प्राप्त कर सकते हैं।

२. गाय : पहले और आज

वैदिक काल से आज तक गाय पर बहुत लिखा गया है। बहुत पढ़ा गया है, आचरण में भी रहा है, लेकिन उसमें धर्म-श्रद्धा का भाव रहा है। आज जब हर कोई चीज़ हर कोई विषय फायदे-नुकसान के तराजू पर तोला जा रहा है तब गाय को भी उसी दृष्टि से और वैज्ञानिक अभिगम से तोलने की बारी आयी है।

जब की उस तराजू पर भी गाय सवा सोलह आना खरी उतरती है। गाय समस्या नहीं, समाधान हैं । यह एक शाश्वत सत्य है यदि समझे तो गाय बिचारी या दयापात्र नहीं बल्कि सर्वशक्तिमान तारणहार है।

गाय के विषय में साहित्य हमारे यहाँ तीन भागों में बँटा हुआ था : ग्रंथस्थ, गृहस्थ और कंठस्थ

अंग्रेजी हुकुमत ने प्रजा को हैरान - परेशान कर दिया था। उनकी कुटिलता एवं चतुराई से भारत की गाय घर से रास्ते पर आ गयी और कत्लखानों में धकेल दी गयी, गायों से संबंधित ग्रंथ एवं जानकारी मिट दी गई । आज हमें यह बिल्कुल याद नहीं कि अर्थव्यवस्था के मूल में जमीन, जलाशय और जंगल है और इन तीनों का रक्षण एवं पोषण गाय के द्वारा ही शक्य है। गोविज्ञान को प्रकाश में लाना और गोरक्षा द्वारा पर्यावरण, भूमि, जल एवं वनों की रक्षा करना यह बेहद ज़रूरी बन गया है। मानवमात्र का यह परम कर्तव्य है।

कृषिप्रधान भारत की परंपरा ट्रैक्टर या रासायनिक खाद की नहीं थी, भारत की कृषि व्यवस्था गौवंश पर आधारित थी। गाय के दूध को धरती का अमृत माना जाता था। गाय यदि जहरीला पदार्थ खा ले तो भी उसके दूध में जहर का असर नहीं होता। गाय के दूध-घी से पोषण, गौमूत्र से औषधि और गोबर से जैविक खाद मिलता हैं। जैविक खाद के प्रयोग से उत्पादित अनाज, सब्जी और फल स्वास्थ्यवर्धक हैं। इसके अलावा उसके प्रयोग से जमीन अधिक उपजाऊ बनती है, गौरक्षा के बिना वनरक्षा, भूरक्षा या जलरक्षा संभव नहीं है और इन चारों का नाश यानि हिंदू प्रजा का नाश। गाय के इस महत्त्व को समझ कर हिंदू प्रजा गाय या उसके दूध-घी का व्यापार नहीं करती थी। परंतु विधर्मी संस्कृतियों के आक्रमण से हिंदू संस्कृति छिन्न-भिन्न हो गयी।

वेदों ने गाय को अहन्या यानि कि उसको हना नहीं जा सकता। कहकर रक्षण तो दिया ही था, साथ ही उसको मातृपद पर स्थापित भी किया था। आज कत्ल एवं अन्य मार्गों से गायों का ह्रास हो रहा हैं। इसके पीछे कई स्थितियाँ और परिवेश काम कर रहे हैं। आज़ादी से पहले भारत में ३०० कत्लखानें थें ५० साल में उसकी संख्या बढ़कर ४०,००० हो गयी है। आजादी से पहले १० करोड़ गौवंश था, अब मुश्किल से दो करोड़ बचे हैं।

वेद में " गायों विश्वस्य मात्र " ऐसा वचन है और गाय के लिए कामधेनु शब्द प्रयुक्त हुआ है। कामधेनु अर्थात सर्वकामना पूर्ण करनेवाली। महाभारत काल में नौ-लाख गायों के पालक को नंद कहते थे, भगवान श्री कृष्ण गोपाल थे यानि कि गायों के पालनहार थे। उन्होंने कहा है कि मुझे मिला हुआ तमाम ऐश्वर्य गौ-चरणरज की प्रसारी है। स्वर्ग से भी उच्च माने जानेवाले श्री कृष्ण के परमधाम के लिए गौ-लोक ऐसा शब्द है, कृष्ण के साथ गाय होती है। तो भगवान शिव का वाहन नंदी यानि की बैल है। राम के पूर्वज महाराज दिलीप नंदिनी नामक गाय को पूजते थे। तिलक कहते थे, मुझे मार डालों पर गाय पर हाथ मत उठाओ। गांधी जी ने सालों पहले कहा था कि गौरक्षा का प्रश्न स्वराज से भी ज्यादा विकट है। वह हक़ीकत आज सामने आ खड़ी है। भगवान महावीर ने कहा था कि गौरक्षा के बिना मानवरक्षा असंभव है। मुस्लिम संत रसखान कहते कि पुन:पुन यदि जन्म लेने को मिले तो नंद बाबा की गायों के बीच ही जन्म लूँ। मोहम्मद पैंगबर ने कहा था कि गाय का दूध रसायन, घी अमृत तथा मांस जहर हैं। शिवाजी महाराज ने बचपन में ही एक गौ हत्यारे का सिर काट दिया था।

आज गाय और गौवंश पर संकट खड़ा हुआ है। साथ ही गौ हत्याबंदी की इच्छा रखनेवाला एक वर्ग भी खड़ा हुआ है। यह वर्ग संविधान की धारा ४८ को अधिक महत्त्व दे रहा है लेकिन यह धारा आदेशात्मक नहीं मार्गदर्शक धारा है। इसको संविधान में दाखिल करने का एक उद्देश्य देश में संपूर्णत: गौ-वध बंदी करवाने की इच्छा रखनेवालों को चुप करवाने का था। हमने देखा कि धारा ४८ के साथ ही संविधान का निर्माण हुआ था। तब से लेकर आज तक गायों का वध होता ही रहा है। हमने यह भी देखा की उ.प्र. और बिहार जैसे राज्यों में जब संपूर्णत: गौ-वध बंदी जाहिर की थी तब अदृश्य ताकतों की सहायता से मुस्लिम कसाइयों ने सुप्रीमकोर्ट में इसके खिलाफ आवाज उठाई थी। फाओ और यूनो

जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के हस्तक्षेप एवं सुप्रीमकोर्ट द्वारा राज्यों के कायदों में किए गए फेरबदल के कारण गौ-वध बंदी अर्थहीन हो गयी। आज उन तीनों राज्यों में और उसी के नक्शेकदम पर समग्र देश में गायों के कत्ल और संपूर्ण गौवंश के निकंदन का कार्य चल रहा है। दूसरी ओर भारत के सबसे बड़े और विश्व के दूसरे नंबर के दूध-घी, दवा और अनाज के बाजार को कब्जे में करके भारत के गले में आर्थिक गुलामी का फंदा डालने की चाह रखनेवाली विदेशी सत्ताएँ भी हमारे पशुधन का नाश करने के प्रपंच रच रही हैं।

इन परिस्थितियों में भारत की गाय एक अंतर्राष्ट्रीय प्रश्न बन गयी है। और भारत को विश्व बैंक या महासत्ताओं का आर्थिक संस्थान बना देने के षड्यंत्र का निशाना बन गयी है। इसलिए गायों का विचार हिंदू संस्कृति के अस्तित्व का प्रश्न है और उसके बारे में उसीप्रकार से सोचा जाना चाहिए।

डेयरी उदयोग एवं विदेशी प्रजातियों ने किस प्रकार गौवंश संस्कृति को नष्ट किया है और गाय संबंधित अन्य जानकारी का यदि अधिक अभ्यास करना हो तो अखिल भारत कृषि गौसेवा संघ द्वारा संपादित पुस्तक गौ-मीमांसा को पढ़ना चाहिए।

३. गौवंशी विकास कैसे होता है?

प्रकृति में कुछ भी अनुपयोगी नहीं होता। सवाल है उपयोग करने की क्षमता और योग्यता का, प्रवर्तमान यांत्रिक विकास का विरोध किए बिना समय एवं शक्ति का व्यर्थ व्यय किए बिना हाथ में उपलब्ध वैकल्पिक उपाय के तौर पर गौवंशी विकास की संभावनाओं का ठोस निदर्शन होते रहना ज़रूरी है। अमेरिका के कैलिफोर्निया में ९०,००० गायों की भव्य गौशाला है। जिसमें अपंग, दूध न दे सके ऐसी अथवा असमर्थ गाय-बैल का भी पोषण किया जाता है। फिर भी वे मुनाफा कमा रहे हैं। सऊदी अरब में ३६,००० गायों की अलशफीअ गौशाला है। इडर की गौशाला में गोबर गैस से बिजली पैदा की जा रही है। धर्मज में चरागाह की जमीन में गटर के पानी से घास उगाई जाती है।

कच्छ की लूणी पांजरापोल गौमूत्र एवं पंचगव्यों में से औषधि बनाकर अपने पैरों पर खड़ी हुई है।

जब किसान एवं मालवाहक कच्चे माल को मूल्य वृद्धि वाले उत्पादन में बदलना सीख लेंगे तब उनके मुकाबले यांत्रिक विकास पीछे रह जाएगा। सिर्फ गौवंश की बात करें तो गाय दूध देती है। इसके अलावा गौवंश जीवनभर गौमूत्र और गोबर देता है। उसकी स्थूल प्राप्तियों के अलावा संस्कारयुक्त संस्कृति का भी निर्माण होता है। गौवंश तो मरण के बाद भी कितना कुछ देता है, उसकी चमड़ी, चर्बी, हड्डियाँ, सींग, पूँछ आदि यह सब उपयोगी है और खरीदी भी जाती हैं। जिस जमीन में उसे दफनाया जाता है उस जमीन की उपज क्षमता में वृद्धि होती है। हमको उसका योग्य जतन करना नहीं आता और हम दिशाहीन होकर दौड़ना सीख गए हैं। गौवंश को केवल मुनाफे के मापदंड पर तौलना योग्य नहीं, गौवंश मात्र धार्मिक विचार नहीं, गौवंश उपयोगिता, गुणवत्ता और संस्कारिता का त्रिवेणी संगम है।

४. गौसेवा और गौवंश

गौ में पश्यामहं नित्यं गाव: पश्यंतु में सदा।
गावोस्मांक वयं तासां यतो गावस्ततो वयम।।

(मैं नित्य गायों का दर्शन करता हूँ गाय सदा मेरे सामने देखती हैं, हम गाय के हैं, जहाँ गाय वहाँ हम यानि गाय से ही हमारा अस्तित्व है।)

भारतीय संस्कृति के उद्‌भव काल से लेकर सदियों तक विदेशियों की गुलामी के दौरान भारत में गायों का सुवर्णकाल था।

ऊँ गोभ्य नम: ऊँ वृषभाय नम: ऊँ गोभूमये नम: ऊँ गोसंस्कृत्यै नम: यह मंत्र भारत में घर-घर बोला जाता था भारत के मुख्य सात गौवंश इसप्रकार हैं –

१. गीर (गुजरात)

२. शाहिवाल (पंजाब)

३. लाल सिंधी (राजस्थान)

४. राठी (राजस्थान)

५. थरपाकर (राजस्थान)

६. कांकरेज (गुजरात)

७. ओंगोल (आंध्र)

आंध्र, राजस्थान, हरियाणा, कर्नाटक, कांकरेज, गीर और मध्यप्रदेश के बैल उमदा और शक्तिशाली माने जाते हैं। आजादी के समय में भी सौराष्ट्र में लाखों गाय-बैल थें, प्रजा गाय का दूध-घी भरपेट खाती थीं लेकिन सरकारी नीतियों और सरकार की कम समझ के कारण गौवंश घिसता चला गया। गाय का दूध-घी दुर्लभ बने जो बचा वे गौवंश गरीब रबारी, भरवाड और मालवाहकों के पास रहे, किसी संस्थाओं ने गायों को रखा। गौशालाओं में गौवंश के संवर्धन से ज्यादा अनाथ गायों के रक्षण का काम होने लगा।

ब्राजील ने लगभग १०० जितनी गीर की गायों को मँगवाकर लाखों गायों के वंश को उत्पन्न किया। हमने हमारी गीर गायों का नाश होने दिया। हज़ारों सालों से गाय के गोबर और गौमूत्र से होनेवाली कृषि का नाश हुआ रसायन युक्त खाद से जमीन की उपज क्षमता का नाश हुआ। संतुलन बिगड़ा, खर्च बढ़े और रोग घर-घर आ गए, हम भूल गये की गाय धन कमाने का साधन मात्र नहीं, जीवन का आधार है। सफल कृषि के लिए चार एकड़ जमीन के सामने एक गाय होनी चाहिए।

कृषि संस्कृति में गौवंशों का महत्त्व मानो उतना कम है। भारत की संस्कृति विविध धर्म, विविध परंपरा और विविध भाषाओँ से बनी हुई हैं। इन विविधताओं से जुड़ा हुआ स्त्रोत मतलब गाय। गाय नवनिधि की दाता मानी जाती है। यह नवनिधि यानि बल, बुद्धि, आरोग्य, आयुष्य, लक्ष्मी, संतति, कीर्ति, विजय एवं मोक्ष। गाय का पालन-पोषण सरल है। स्थानांतरण और उल्पआहार उसे जमता है। उसका दोहन हर ऋतु में समान होता है। वृद्ध गौवंश अपने आप ही कम खाता है। यदि गोपालक उचित ध्यान दे तो व्यर्थ

हुए चारे में से ही दो-तीन वृद्ध पशुओं का पालन हो सकता हैं और वृद्ध पशु गोबर और गौमूत्र तो देते ही है। गौरक्षा यह प्राणवान प्रजा के सृजन का मार्ग है। गाय में ३३ कोटि यानि करोड़ नहीं, मगर प्रकार तैंतीस कोटि देवता यानि

८ वसु (धरती, अग्नि, पानी, वायु, ध्रुव, चंद्र, प्रभात, प्रकाश)

११ ऋद्र (दस प्राण – प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, धनंजय(उसका वहन करनेवाली दस नाड़ी – इडा पिंगला, सुषुम्ना, गांधारी, हस्तिजिल्वा, पूर्वा, यशस्विनी, कुहू, अलंबुषा, शांनी) और मन

१२ आदित्य (महीने)

०१ आत्मा

०१ परमात्मा

हमारे शास्त्रों में गौसेवा के आठ अंग कहे है : गोपालन, गोरक्षण, गोसंवर्धन, गोचिकित्सा, गोविज्ञान, गोविद्या और गोमंत्र

५. गोवंशी विकास यानि क्या?

गौवंशी विकास यानि ऐसा विकास जिसमें :

- ★ वृक्ष रक्षा, भूमि रक्षा, जल रक्षा, बीज रक्षा हो
- ★ सभी का, समष्टि का राष्ट्र का, श्रेय बढ़े
- ★ गौवंश बढ़, आरोग्य और उत्पाद बढ़े
- ★ पोषणमूल्य, औषधमूल्य, निकासमूल्य बढ़े
- ★ पर्यावरण, ऋतुचक्र, समष्टि का संतुलन बढ़े
- ★ बेरोजगारी, गरीबी, महँगाई, प्रदूषण कम हो
- ★ ऊर्जा, इंधन, खाद, पाक रक्षण, मालवहन बढ़े
- ★ स्वरोजगार, स्वाश्रय, स्वायत्तता, स्वावलंबन, समानता जैसे मूल्यों का संवर्धन हो
- ★ सत्व, स्वाद, सोडम, उपज क्षमता बढ़े

६. गौवंशी विकास किसलिए?

मानव समाज में गौवंश का प्रवेश हुआ तभी से ही मानव संस्कृति का आरंभ हुआ ऐसा माना जा सकता है। सभी पशुओं में से गौवंश मानव जाति के लिए आत्मीय स्वजन समान है। प्राचीन भारत में गौधन सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदंड होता था। आज भी गायों के समूह के लिए गोधन या धन शब्द का प्रयोग होता है। यह गोधन से ही आया हुआ शब्द है गोपालक तब समाज के अग्रणी माने जाते थे। भोजन का आरंभ निवाला निकालकर किया जाता था। गाँव से जोड़कर ही गोचारे की भूमि रखी जाती थी। अनुभव के आधार पर हम मनुष्य गाय का महत्त्व समझे और इसलिए उन्हें गौमाता का दर्जा दिया। इसमें भावुकता से अधिक उपयोगिता और ऋण स्वीकार का भाव विशेष है। अन्य पशुओं से गाय अधिक समझदार और संस्कारी होती है। भैंस का बच्चा समूह में अपनी माँ को पहचान नहीं पाता जब की गाय का बछड़ा अपनी माता को तुरंत ढूँढ लेता है और उसी का दूध पीता है। गाय अपने पालक के परिवार में बीमारी आयी हो तो समझ जाती है और जब चरने जाती है तब कंडू कदियांतु जैसी वनस्पति औषध को ढूँढकर उसके पान चबा जाती है। जिससे उस वनस्पति के गुण उसके दूध में उतरते है प्राकृतिक आपदाओं के लक्षण भी गाय जल्द ही समझ लेती है। भैस में यह सूक्ष्म समझ नहीं होती है।

क्रोधित गाय दौड़ रही हो और सामने यदि छोटा बच्चा आ जाए तो व तुरंत रास्ता बदल लेती है। गाय का स्वभाव भला एवं स्नेहमय होता है। भारत की देशी गाय को प्रकृति ने कुबड़ दी है। जो विदेशी गायों में नही होती इस कुबड़ में सूर्यकिरणों में से ऊर्जा ग्रहण करनेवाली सूर्यकेतु नामक नाड़ी होती है। इस ऊर्जा का अंश दूध में मिलने से गाय के दूध में कच्चे सोने जैसा पीलापन होता है। गोबर और गौमूत्र के अनेक विविध प्रयोगों से आज गौक्रांति के द्वारा जनक्रांति की क्षितिजें विकसित हुई हैं।

गौमूत्र के सत्व और तत्व से १०८ रोगों का इलाज हो सकता है। गोबर में रेडियो एक्टिव ट्रांसियम होने से अणुरज से उबरा जा सकता है। गाय का पंचगव्य कैंसर जैसे घातक रोग का सस्ता, सरल और सही इलाज कर सकता हैं। गाय के दूध में हायर्डन्सिटी लायपोप्रोटीन होता है जो दिमाग के

कोषों के लिए बहुत फायदेमंद है। इसीलिए गाय के दूध-घी-मक्खन-छाछ बुद्धिवर्धक एवं स्मरणशक्ति बढ़ानेवाले होते है, जबकि भैंस का दूध कफ करता है और आलस बढ़ाता है, गाय का दूध पीने से भाव एवं मूल्यों को ग्रहण करने की क्षमता बढ़ती है जिससे जीवन बेहतर होता है। भावी प्रजा गाय का महत्त्व समझ सके इसीलिए हमारे पूर्वजों ने धार्मिक विधि-विधानों में गाय के दूध-दही-घी-मक्खन-छाछ-मूत्र-गोबर आदि के उपयोग करने का रिवाज बनाया है।

७. यांत्रिक विकास – गौवंशी विकास

★ यांत्रिक विकास की प्रक्रिया और वृद्धि गतिशील है, गौवंशी विकास की प्रक्रिया और वृद्धि धीमी है।

★ यांत्रिक विकास समयोचित प्रक्रियाजन्य है, गौवंशी विकास पारंपारिक प्रक्रियाजन्य है।

★ यांत्रिक विकास मानवसर्जित है, गौवंशी विकास, प्राकृतिक है।

★ यांत्रिक विकास जड़ अवस्था है, गौवंशी विकास जीवंत अवस्था है।

★ यांत्रिक विकास से स्थूल समृद्धि/सुविधा बढ़ती है, गौवंशी विकास से सूक्ष्म क्षमता बढ़ती है।

★ यांत्रिक विकास आर्थिक बल पर आधारित है, गौवंशी विकास मानव बल आधारित है।

★ यांत्रिक विकास स्पर्धात्मक पद्धति है, गौवंशी विकास सहयोग की पद्धति है।

★ यांत्रिक विकास में आर्थिक शोषण है, गौवंशी विकास में आर्थिक सहकार है।

★ यांत्रिक विकास गौवंशी विकास सामूहिक संस्कृति के मानस को पोषता है।

★ यांत्रिक विकास असमानता को जन्म देता है, गौवंशी विकास समानता को जन्म देता है।

★ यांत्रिक विकास शहरीकरण को बढ़ावा देता है, गौवंशी विकास ग्राम्य विकास को बढ़ावा देता है।

★ यांत्रिक विकास केंद्रीकरण को जन्म देता है, गौवंशी विकास विकेंद्रीकरण को जन्म देता है।

★ यांत्रिक विकास में विशेषज्ञ का प्रभाव होता है, गौवंशी विकास में श्रम का प्रभाव होता है।

★ यांत्रिक विकास में ऊर्जा का अधिक उपयोग होता है, गौवंशी विकास में ऊर्जा उत्पन्न होती है।

★ यांत्रिक विकास में ह्रास और प्रदूषण है, गौवंशी विकास में स्वच्छता और संवर्धन है।

★ यांत्रिक विकास में उपद्रवकारी कचरा निर्माण होता है, गौवंशी विकास में खाद और ऊर्जा का निर्माण होता है।

★ यांत्रिक विकास संवेदनाहीन है, गौवंशी विकास संवेदनशील है।

★ यात्रिक विकास रोग सृजक है, गौवंशी विकास स्वास्थ्य पोषक है।

★ यांत्रिक विकास पैक और जंकफूड का हिमायती है, गौवंशी विकास शुद्ध खानपान का हिमायती है।

★ यात्रिक विकास में प्राकृतिक जैविक श्रृंखला का संतुलन बिगड़ जाता है, गौवंशी विकास में प्राकृतिक जैविक श्रृंखला का संतुलन बने रहता है।

★ यांत्रिक विकास में मालिक को लाभ होता है, गौवंशी विकास में समाज को लाभ होता है।

★ यांत्रिक विकास में स्थूल विकास होता है, गौवंशी विकास में स्थूल गुणात्मक विकास होता है।

★ यात्रिक विकास में विदेशी निवेश और कर्ज की लाचारी है, गौवंशी विकास में स्थानीय चलन को मजबूत बनाए ऐसा स्वाश्रय एवं खुमारी है।

★ यांत्रिक विकास में जंगल, खदान जैसे प्राकृतिक स्त्रोतों का नाश और ह्रास हो रहा है, गौवंशी विकास प्राकृतिक स्त्रोतों को मजबूत बनाता है।

★ यांत्रिक विकास का प्रेरक बल सिद्धि एवं समृद्धि है, गौवंशी विकास का प्रेरक बल जन-सुखकारी है।

★ यात्रिक विकास में सिर्फ सुशिक्षितों को रोजगार प्राप्त होता है, गौवंशी विकास में अशिक्षित को भी रोजगार मिलता है।

८. गाय का औसतन खर्च और आमदनी

★ गाय का आयुष्य २० से २४ वर्ष, बैल का आयुष्य २० से २२ वर्ष और का आयुष्य २० से २१ वर्ष होता है।

★ बछड़ी ३ से ४ साल की उम्र में गर्मी में आती है, बछड़ा ४ साल की उम्र में बैल बनने योग्य होता है। इस समयकाल में निवेश प्रथम ६ मास में लगभग २५००० + उस के बॉस के प्रथम वर्ष में १८००० + उस के बाद वर्ष में २४००० + उसके बाद के वर्ष में २४००० यह सब मिलाकर कुल ६८,५०० जितना खर्च होता है।

★ गाय का औसतन दैनिक खर्च हरा चारा, सूखा चारा, गोपालक की मजदूरी आदि गिने तो मासिक खर्च ४५०० जितना होता है।

★ अच्छा भोजन और स्वास्थ्य से दूध की मात्रा में बढ़ोत्तरी की जा सकती है। सिर्फ दूध की आमदनी को गिना जाए तो भी रोजाना ३०० रु. होते है, महीने के १००० रु. होते है। गोबर, गौमूत्र और देढ़साल में एक बच्चा दे सो अलग।

★ एक गाय रोजाना १४ से १५ किलो गोबर और ८ से १० लिटर गौमूत्र देती है। चार जितनी गाय हो तो बायोगैस प्लांट की सबसीडी लेकर खर्च बचाकर आमदनी बढ़ायी जा सकती है।

★ छोटे हॉर्सपॉवर के ट्रैक्टर में निवेश चार लाख का, डीजल ऑइल का

१००० के सामने पंद्रह बीघा जमीन की जुताई होती है, उसकी तुलना में खुद की गाय के बछड़ों से तैयार बैल की जोड़ी का निवेश देढ़ लाख, दैनिक भोजन का २५०/- रु. और उसके सामने दस से बारह बीघा जमीन की जुताई होती है। ट्रैक्टर-ड्राईवर की मजदूरी, खेत मजदूर की मजदूरी से अधिक होती है ट्रैक्टर में मेंटेनन्स और रिपेरिंग का खर्च अधिक आता है जबकि बैल से तो गोबर और गौमूत्र की आमदनी होती है।

★ बायोगैस प्लांट की सगरी उत्तम सेंद्रिय खाद है।

★ वैज्ञानिक पद्धति से गौसंवर्धन किया जाए तो स्वरोजगारी, स्वास्थ्य, स्वच्छ पर्यावरण और शोषणमुक्त जीवन हो सकता है, व्यक्ति, समाज परिवार को पोषण मिलता है।

९. गाय का दूध

कुछ अपवादों को छोड़कर विश्व में गाय का दूध सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। गाय जंगली पशुं नहीं है। गाय माँसाहारी पशु भी नहीं है गाय का आहार मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। कृषि मानव सृजित क्रिया है अत: कृषि-गाय-मानव के बीच का संबंध अनिवार्य व महत्त्वपूर्ण है विश्व के अधिकतर लोग माँसाहारी हैं। ऐसे लोग भी दूध का प्रयोग करते हैं। दूध सभी के लिए अनिवार्य आहार है। अत: उसका विवेकपूर्ण उपयोग करना ज़रूरी है। गाय का पूजन या गाय की पवित्रता की बातें करने से या गौवंश बचाओ इत्यादि नारे लगाने से कुछ नहीं होगा दूध के प्रेमी उसकी महिमा का गान करते रहें अथवा दूध के विरोधी अपनी दलीलें पेश करते रहें इससे भी कुछ नहीं होगा।

तासीर और पाचनक्षमता के अनुसार योग्य मात्रा में दूध का प्रयोग किया जा सकता है। सही अर्थों में तो दूध पीने की नहीं बल्कि खाने की चीज है। जितना हो सके उतनी अधिक मात्रा में यदि उसमें स्लाईवा मिले तो दूध सुपाच्य बन जाता है। यदि दूध एक ही घूँट में पिया जाए तो उसको पचाने के लिए शरीर को अधिक लैक्टिक एसिड पैदा करना पड़ता है। इस प्रक्रिया के कारण आँतों

की आंतरिक मुलायम व चिकनाई पर बुरा असर पड़ता है। पाउडर के दूध में से पानी रक्त में मिल जाने के बाद आंतरत्वचा पर पाउडर की एक परत जम जाती है। उसे निकालने के लिए दस्त होते हैं। डेअरी का दूध भी सावधानी माँगता है। वह दूध ताजा नहीं होता पॉश्च्युराईजड़ करना, थैली में भरना आदि प्रक्रियाओं में २-३ दिन बीत जाते हैं।

भारतीय औषधि विज्ञान परिषद के संशोधन बताते है कि भैंस की अपेक्षा गाय के दूध में विशेष पोषणमूल्य होते है। उसमें विटामिन संतुलित मात्रा में होता है। उसमें अनुकिरणों का प्रतिकार करनेवाला स्ट्रोंटियम तत्व होता है गाय के उपलों को जलाने से प्लेग के जंतुओं का नाश होता है। गाय की कूबड़ में होनेवाली सूर्यकेतु नाड़ी के कारण गाय के दूध का रंग पीला और घी सुनहला होता है। गाय का दूध मीठा लगता है गाय का दूध पीनेवाले लोग ज्यादा सुरम्य, बलवान, संस्कारी और तेजस्वी होते हैं।

गीर की लाल गाय ब्राजील में यदि रोजाना ६० लीटर दूध देती है तो भारत की गायों की रोज़ाना दूध देने की औसत ४ लीटर से भी कम क्यों है? वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समझदारी पूर्ण संघर्ष से दूध के उत्पादन के साथ-साथ गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है। जीवंती, सतावरी, गाजर, दो-तीन प्रकार का हरचारा, देसी गुड, गेहूँ-जौ के कोमल पौधे इत्यादि देने से गाय के स्वास्थ्य एवं दूध की मात्रा और गुणवत्ता में फायदा होता है। गाय और बछड़ा दोनों तंदुरुस्त होते हैं। लंबी आयु तक जीते हैं और अधिक लाभ देते हैं। इसके अलावा गाय के पास से प्राप्त होनेवाले सभी औषधि द्रव्यों का आरोग्यमूल्य बढ़ता है।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार गाय के दूध से निम्नलिखित फायदे हैं –

★ गाय का दूध रक्तसंचार प्रणाली को सुचारु ढंग से चलाने में मदद करता है।

★ गाय का दूध रेचक होने के कारण आँतों को साफ रखता है।

★ गाय के दूध में पाया जाने वाला एमिनो एसिड प्रोटीन को सुपाच्य बनाता है और किडनी के लिए फायदेमंद होता है।

★ गाय के दूध में पाया जानेवाला विटामिन बी-२, बी-३, इम्युनिटी बढ़ाता है।

★ गाय का दूध थंडा होता है इससे एसिडिटी नहीं होती।

★ ब्रेस्ट कैंसर, स्कीन कैंसर, डायबीटीज और कोलेस्ट्रोल से सुरक्षा देता है।

★ गाय का दूध प्राकृतिक रूप से एंटी-ऑक्सीडेंट है।

★ माँ के दूध के बाद गाय का दूध बच्चे के लिए श्रेष्ठ विकल्प है।

★ गाय के दूध में वसा की मात्रा कम होने के कारण मोटापा नहीं बढ़ता।

★ गाय का दूध सौंदर्य को बढ़ानेवाला, आयुष्य को बढ़ानेवाला और वृद्धत्व से दूर रखनेवाला है।

गाय का दूध अर्थात केवल देशी गाय का दूध जर्सी, एच.एफ. होलस्टिन आदि विदेशी गाय का दूध अलग है पशुशास्त्र की दृष्टि में देशी गाय और काउ यह दोनों अलग प्रजाति हैं दोनों के दूध के गुणों में अंतर है।

पालतू पशु के तौर पर गाय सौजन्यशील और प्रिय है। इसका दूध भोजन के रूप में लिया जाता है। इसकेअलावा दूध पंचगव्य का घटक भी है गाय का पंचगव्य उपचार में प्रयुक्त होता है। गौमूत्र, गोबर, पाक सुरक्षा के लिए और ईधन के रूप में प्रयुक्त होता है। बैल कृषि और भारवहन के लिए उपयोगी है। इस प्रकार गाय का सामाजिक,आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्य की जितनी प्रशंसा की जाए उतना ही कम है। गाय पर दया दिखाने की बजाय यदि गाय के गुणों को सदा याद रखें तो हमारा और सबका कल्याण होगा।

१०. गौमूत्र का उपयोग

गौमूत्र में उत्तम औषधीय गुण है। इसमें जीवाणुनाशक, विषाणुनाशक तत्त्व होते हैं। भारत के आयुर्वेदाचार्य चरक मुनि ने तो मूत्राष्क लिखा है। ताज़ा गौमूत्र गंध हीन तथा स्वाद में नमकीन, तीखा, कड़वा, मीठा, खट्टा-मीठा ऐसे पाँच प्रकार के रसवाला होता है गाय के शरीर से निष्कासित होने के बाद पंद्रह मिनट के बाद रासायनिक प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप इसमें गंध निर्माण होती है। एक लीटर गौमूत्र को गरम कर के इसकी भाप के द्वारा अर्क बनाने के बाद ५० ग्राम जितना घनत्व प्राप्त होता है।

सुश्रुत संहिता के अनुसार गौमूत्र शक्तिवर्धक, कफवात को हरनेवाला, नेत्ररोग, कुष्ठरोग, दस्त, सफेद दाग, कब्ज, कृमि, खून की कमी(एनीमिया), दिल की बीमारी, उच्च रक्तचाप, कैंसर आदि रोगों में उपयोगी है। इसका अर्क १०८ रोगों में लाभदायी है। अर्क के साथ में शहद या गाय के दूध का सेवन करना भी लाभदायी है। स्वस्थ्य गाय के मूत्र का ही उपयोग करना चाहिए सिर्फ मालिश के बाहरी उपयोग के लिए तीन मास तक के अर्क का उपयोग किया जा सकता है। गाय सालाना ७५० लीटर मूत्र देती है गौमूत्र के शुष्क पदार्थ में नाईट्रोजन, कार्बनिक पदार्थ, पोटाश और फॉस्फोरिक एसिड होता है।

११. पंचगव्य और उसके उपयोग

पंचगव्य क्षीर दधि घृत गौमूत्र गोमये:
भिषन्जा सम्मतं न्युमधिभेषज साधनम

गाय का दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र इन पाँच द्रव्यों को समान मात्रा में मिलाने से पंचगव्य बनता है। कुछ प्रैक्टिशनर इसमें दर्भ का पानी भी पिलाते हैं। आदर्श रूप में पीली गाय का दूध, ब्लू शेडवाली या चितकबरी गाय का दही, काली गाय का घी और सफेद गाय का गोबर १५-१५ ग्राम और लाल गाय का मूत्र ५० ग्राम तथा साथ ही साथ दर्भ का पानी १० ग्राम लेकर मिश्रित करने से पंचगव्य बनता है।

गाय का दूध गुरु और स्निग्ध गुण, मधुर रस, मीठे छींटे, शीतवीर्य, वातपित्तशामक, कफकारक साथ ही साथ मानसरोग, उदररोग, बवासीर, पेशिच साथ ही साथ मूत्र कच्छ जैसे रोगों को हरनेवाला है।

गाय की दही गुरु गुण, मधुर रस, मधुर विपाक, उष्णवीर्य, वातशामक, कफपित्तकारक साथ ही साथ बुखार, रक्तविकार, बवासीर, पेशिच तथा मूत्रकच्छ जैसे रोगों को हरनेवाला है।

गाय का मूत्र तीक्ष्ण और लघु गुण, कटु और अन्य रस, कटु विपाक, उष्णवीर्य, कफवातशामक, पित्तकारक साथ ही साथ त्वचा विकार, उदररोग, शिवत्र, पांडुरोग, पीलिया जैसे रोगों को हरनेवाला है।

गाय का गोबर लघु-गुण, अन्य और सुखदायक रस, कटु विपाक, उष्णवीर्य, कफशामक, पित्तवर्धक साथ ही साथ श्वास, नेत्ररोग, मुखरोग, वातव्याधि, त्वचारोग जैसे रोगों को हरानेवाला है।

पंचगव्य से शरीर शुद्धि, मन शुद्धि, द्रव्य शुद्धि, भूमि शुद्धि तथा वातावरण शुद्धि यह सारी शुद्धियाँ संभव हैं ।

१२. गौमूत्र और गोबर : खाद का अनमोल खज़ाना

जैसे मानव के लिए भोजन वैसे ही भूमि के लिए खाद अनिवार्य है भारत में बहुतायत पशुओं के होने के बावजूद जैविक खाद की बजाय उर्वरक रासायनिक खाद के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसका कारण मनुष्य समझता नहीं और मलमूत्र के उपयोग को इस दृष्टि से ही देखता है या सोचता है कि शरीर द्वारा फेंके गए कचरे को अनाज उत्पादन में कैसे प्रयुक्त किया जा सकता है? विश्व के विकसित देशों में मलमूत्र और कचरें का उपयोग कर ईंधन, बिजली और खाद को प्राप्त किया जाता है वह प्रक्रिया गंध मुक्त, गंदगी मुक्त और सस्ती है इसकी आवश्यकता या सुविधानुसार छोटी-मोटी ईकाइयाँ बनाई जा सकती है। बायोगैस प्लांट में ईंधन के लिए गैस तो उत्पन्न होती ही हैं साथ ही स्लरी के रूप में उत्तम खाद भी मिलती है

१९९५-९६ में प्रति हेक्टेयर ५१.६ किलो रासायनिक खाद का उपयोग किया गया था २००१-०२ में वह बढ़ाकर प्रति हेक्टेयर १७० किलो रासायनिक खाद उपयोग में लाया जाने लगा वह बढ़त आज भी चल रही है परिणाम क्या हुआ? गेहूँ के देशी बीज को जैविक खाद की कृषि में १२ सिंचाई की ज़रूरत होती थी, रासायनिक खाद की कृषि में ३० से ३५ सिंचाई की आवश्यकता होती है इससे मिटटी का कटाव हो जाता है खर्च और मेहनत बढ़ती है पानी की किल्लत पैदा होती है

उर्वरक खाद और उर्वरक जैविक खाद खुद की ज़मीन के लिए काम में तो आते ही हैं, साथ ही विधिवत तरीके और वैज्ञानिक रीति से गोबर-गौमूत्र का उपयोग करें तो वह अतिरिक्त आय भी पैदा कर सकता है प्रत्येक गौशालाओं को भी स्वयं बायोगैस प्लांट और खाद व औषधि बनाने के केंद्रों के रूप में चलाना सीख लेना चाहिए

कृषि और गौपालन का योग्य संयोजन हो तो उत्तम परिणाम मिलता है उत्तम बैल और दुधारु गाय की संख्या और उपयोग बढ़े तो सालाना ३ से ४ फ़सल की उपज ली जा सकती है बेकारी और गरीबी कम करने के लिए गौ-कृषि आधारित अर्थतंत्र के निर्माण की आवश्यकता है।

१३ गऊधाम – सर्वांगीण विकास का स्त्रोत

गौवंश विकास के सृजन की मूल इकाई गऊ धाम है। गऊ धाम एक सामान्य इकाई है। इससे होनेवाले लाभ के पहले चरण में घास के बारे में स्वावलंबी बना जा सकता है। दूसरे चरण में गाँव का पानी बह न जाये और गाँव में ही रहे इनके लिए कुएँ चैकडैम, गृहटकी, खेत तालाब आदि का निर्माण किया जाता है। अनुपयोगी ज़मीन जितने में संभव हो उतने पेड़ लगाने चाहिए गाँव के उत्पादन के अनुसार संयुक्त गौभंडार खोलना और चलाना आदि होता है। तीसरे चरण में लूणी (कच्छ) पांजरापोल की तरह गौमूत्र-अर्क, औषधि, पंचगव्य द्वारा इलाज, दैनिक उपभोग की वस्तुओं का प्रदूषणरहित उत्पादन, आरोग्यधाम, कौशल उद्योग शिक्षा केंद्र, गौ-कृषि विकासलक्षी संशोधन आदि गतिविधि को विकसित किया जा सकता है यदि ठीक से विकसित किया जाए तो गऊ धन भारत की उदात्त संस्कृति और सच्चे विकास का स्त्रोत बनेगा और एक दिन अहिंसक गौक्रांति होगी और इसमें कोई संदेह नहीं है।

१४. गौशाला तथा औषधि निर्माण

गौशाला और औषधि निर्माण शाला बना लें तो संस्था को भी लाभ होगा और समाज को भी लाभ होगा औषधि निर्माण शुरू करने के लिए निम्नलिखित कुछ मुद्दों पर अवश्य विचार किया जाना चाहिए –

★ जो औषधि द्रव्य बनाने हैं उनकी सूची।

★ औषधि द्रव्य बनाने के लिए पंचगव्य और अन्य आयुर्वेदिक घटक द्रव्यों की उपलब्धता।

★ औषधि निर्माण हेतु उत्तम घटक द्रव्य साथ ही इसे बेचने के लिए बाज़ार की सुलभता।

★ इसकी क़ीमत सुनिश्चित करना और ऋतू अनुसार तथा पंचगव्य की उपलब्धता के अनुसार इसमें उतार-चढ़ाव के अलावा तेज़ी या मंदी का अभ्यास।

★ निर्धारित औषधि निर्माण के लिए आवश्यक स्थान।

★ पंचगव्य औषधि निर्माण के लिए अनुभवी वैद्य या चिकित्सक।

★ पंचगव्य औषधि के निर्माण एवं परीक्षण के लिए आवश्यक संसाधनों वाली प्रयोगशाला

★ पंचगव्य औषधि निर्माण की समयानुसूची।

औषधि निर्माण के बाद पैकिंग, देखभाल, आवश्यक जगह पर भेजना, कुछ औषधियाँ निश्चित अवधि में (अनुपयोगी) हो जाती हैं उसे देखना आदि के लिए योग्य प्रशिक्षण और तंत्र की आवश्यकता होती है इसका इंतज़ाम भी होना चाहिए।

हर राज्य में खाद्य और जड़ी-बूटी चिकित्सा प्रशासन होता है। अत: उससे अनुमति और आवश्यक प्रमाणपत्र प्राप्त करना इसके लिए निर्माणाधीन औषधि का पूरा नाम, ग्रंथाधार, इसके घटक द्रव्यों की सूची व उनकी मात्रा रोगाधिकार आदि का विवरण देना आवश्यक होता है। प्रशासन द्वारा प्रमाणित ग्रंथों की सूची प्रशासन के पास होती है। जो औषधियाँ इन सूचित ग्रंथों के उपयोग से बनाई जाती हैं उन्हें ग्रंथोक्त औषधि कहते हैं। यदि औषधि द्रव्य के घटकों में फेरबदल किया जाए या अनेक औषधियों को मिलाकर नई औषधि बनाई जाए तो उसे आयुर्वेदिक प्रोपायटरीऔषधि कहते हैं। ये सारी जानकारी साथ ही इसका स्वरूप अर्थात चूर्ण, गोली, तरल द्रव्य आदि की जानकारी प्रशासन के लिए आवश्यक है। प्रत्येक औषधि जो कि बाह्य या आभ्यंतर प्रयोग में प्रयुक्त होती है। इसका निर्माण एवं निष्कर्षण अलग-अलग होना चाहिए। अलग-अलग खंडों में होना चाहिए हर खंड १०० से २०० वर्ग फुट का होना चाहिए। कौन सी औषधि के लिए कितनी जगह की आवश्यकता है इसकी सूची भी प्रशासन के पास होती है।

पंचगव्य औषधि का कार्यशाला भवन सीमेंट का होना चाहिए छत भी सीमेंट की होनी चाहिए दरवाज़ों और खिड़कियों पर जाली तथा गर्म हवा बाहर निकलने की व्यवस्था होनी चाहिए।

घटक द्रव्यों को साल में दो बार ही खरीदना चाहिए और धूप-छाँव देकर वायुरोधक डिब्बों में भरकर रखना चाहिए डिब्बों के लेबल में विक्रेता का नाम और खरीद की तारीख डालनी चाहिए।

औषधि बनाने की कालावधि भी बनानी चाहिए जैसे कि गोमय भस्म दंतमंजन बनाना है। तो इसके लिए गरमी की ऋतू उत्तम है कामधेनु नहाने का साबुन बनाने के लिए दीपावली के बाद का समय उत्तम है और गौमूत्र औषधि हेतु बारिश का मौसम उत्तम है। इन दिनों पूरे साल के लिए गौमूत्र अर्क बनाकर संभालकर रखा जा सकता है। सामग्री रखने-निकालने के लिए, नापने-तौलने के लिए कर्मचारी स्वच्छ एवं प्रशिक्षित होने चाहिए। उनको निर्धारित पोषाक, टोपी, मास्क आदि देना चाहिए अनुभवी चिकित्सक के मार्गदर्शन में बनी औषधियों के पैंकिंग पर सभी तरह की जानकारी वाले लेबल लगाने चाहिए।

पंचगव्य औषधि के निर्माण में बड़ी मशिनरी की आवश्यकता नहीं होती। हाथ से चलनेवाले छोटे यंत्र से काम हो सकता है। इस प्रकल्प का एक हेतु ग्राम उद्योग भी है। बिजली बराबर मिल रही हो तो छोटा और बड़ा मिक्सर, चूर्ण बनाने के लिए पल्वराईज़र, विदयुत मथनी, फिलिंग और सेलिंग मशीन खरीदी जा सकती है। अर्क निकालने के लिए अर्कपातन यंत्र खरीदना चाहिए अभी तो बिजली के अलावा अन्य ऊर्जा से चलने वाले यंत्र भी बनने लगे हैं ।

१५ पांजरापोल को गऊधाम कैसे बनाया जाए?

पांजरापोल करुणा और हिंसा का प्रतीक है फिर भी बड़े पैमाने पर पांजरापोल का अस्तित्व बनाए रखने के लिए सूत्रधारों को काफी मेहनत करनी पड़ती है। कभी-कभी कटु अनुभव भी होते हैं शुभ हेतु से होनेवाला शुभ कार्य अविरत चलता रहता है। इसके लिए वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखकर परिवर्तन करना आवश्यक होता है।

यदि पांजरापोल का गौशाला आगे चलकर गऊधाम में रूपांतरित किया जाए तो पांजरापोल को बतौर संस्था बनाया जा सकता है और गोरक्षा और गोसंवर्धन के कार्य में गति लाई जा सकती है। मात्र दान, अनुदान या फंड पर आश्रित रहने की बजाय कमाई भी कर सकती है। भारत में ३६००० से ज्यादा और गुजरात में २५६ से ज्यादा पांजरापोल गौसेवा हेतु कार्य कर रही है। अधिकतम पांजरापोलों के पास कृषि ज़मीन है; पर्याप्त संख्या में पशुधन है, फिर भी कभी-कभी वे विवशता पूर्ण स्थिति का शिकार बनते हैं। सरकारी लाभ एवं सहयोग भी ढीला ही साबित होता हौ स्थायी समाधान तो स्वाश्रय अर्थात आत्मनिर्भर बनना ही है और उसके लिए संयुक्त प्रयत्नों की आवश्यकता है।

सबसे पहले तो गौशाला या पांजरापोल की जगह गऊधाम शब्द का प्रयोग शुरू करना। इससे दृष्टिकोण साथ ही साथ मानस में भी आवकार्य परिवर्तन होता जाएगा। गऊधाम में प्रगति स्थिर रहनी चाहिए। खर्चीले या आडंबरयुक्त आयोजन की जगह व प्राकृतिक आयोजन प्रतिबिंबित हो ऐसी संरचना करनी चाहिए

उसके बाद गऊधाम का सुव्यवस्थित प्रोजेक्ट बनाना चाहिए उसके लिए विशेषज्ञ की सेवा व सलाह का उपयोग करना चाहिए भारत में ६ लाख गाँवों के लिए ३६००० पांजरापोल कार्यरत हैं और गुजरात में १८ हजार गाँवों के लिए २५६ पांजरापोल कार्यरत हैं इन सभी को व्यवहार्य एवं संनिष्ठ नेताओं की सेवाएँ मिलती हैं फिर भी राजस्थान के पथमेडा गऊधाम जैसी संस्था बिरले ही देखने को मिलती है पांजरापोल के सूत्रधारों को आपसी सौहार्द से कमियों को दूर करने के कदम उठाने चाहिए

समस्त महाजनों के स्तुत्य प्रयास में वढवाण पांजरापोल की १३३० एकड़ जमीन में से बबूल हटाकर तालाब बनाया गया, मृदा-क्षरण को रोकने के लिए और पशुओं को छाया देने हेतु वृक्षारोपण किया गया इसी तरह मोरबी पांजरापोल में २२००० एकड़ ज़मीन में सुधार हुआ है गुजरात की पांजरापोलों के पास पौने एक लाख एकड़ ज़मीन है इसका सदुपयोग हो ऐसा आयोजन होना चाहिए।

१६. गाय को राष्ट्रीय पशु का सम्मान दें

भारत में सन १९५२ में शेर को राष्ट्रीय पशु का सम्मान मिला था सन १९९२ में बदलकर बाघ को राष्ट्रीय पशु बनाया गया यह चयन या बदलाव किस आधार पर होता है? एक और प्रश्न सहज होता है कि क्या राष्ट्रीय पशु जंगली ही होना चाहिए? पालतू पशु नहीं चल सकता है क्या? राष्ट्र की जनता कौन से पशु के साथ विशेष रूप से जुड़ी हुई है? क्या इसका महत्त्व नही? अगर भारतीय संस्कृति और लोककथाओं पर चिंतन हो तो गाय को राष्ट्रीय पशु कहा जा सकता है ब्राजील में भारत की गीर गाय को राष्ट्रीय पशु का सम्मान दिया स्विट्ज़रलैंड का राष्ट्रीय पशु गाय है हम तो गाय को माता कहते हैं, अत्याधिक फायदा देनेवाले व्यापार या व्यक्ति की तुलना भी दुधारु गाय से करतें हैं, तो गाय को राष्ट्रीय पशु का सम्मान क्यों नहीं देते?

यांत्रिक विकास ने हमलोग बहुत कुछ दिया है फिर आज भी सर्वत्र अशांति छायी हुई है आज हमें आवश्यक है अध्यात्मिक विकास की गोवंशी विकास ही हमें आध्यात्मिक विकास दे सकता है। गोवंशी विकास का प्रतीक "गाय" को राष्ट्रीय पशु के रूप में स्थान और सम्मान मिले यह सर्वथा उचित है।

१७. भारत की दुधारू गायें और बैल

विदेशी विशेषज्ञों ने भारत की गायों के हाई मिल्क और पुअर मिल्क ऐसे विभाग बनाए हैं। यह उचित नहीं है भारत की गायें दो प्रकार की हैं, दुधारु गायें और बैल। दुधारु गाय विपुल मात्रा में दूध देती हैं और वृषभ गाय अल्प मात्रा में दूध देती हैं लेकिन मजबूत बैल देती है।

दोनों प्रकार की गायें बहुत उपयोगी हैं, दोनों तरह की गायें गौमूत्र और गोबर तो देती ही हैं।

दुधारु गाय :

★ हललीकर – कर्नाटक, मध्यम दूध।

★ आंध्र गाय – दूध देने में मध्यम, बड़ी कुबड़वाला बैल देने के लिए प्रख्यात।

★ गीर – काठियावाड़ सौराष्ट्र, यह गोवंश सुंदर है अत्याधिक दूध और मजबूत बैल देने के लिए प्रख्यात हैं।

★ देवनी – गीर प्रजाति से मिलती हुई आंध्र की गाय अधिक दूध और मजबूत बैल देती है।

★ महवाती – अलवर और भरतपुर मध्यम दूध और मजबूत दूध देती है।

★ निमाड़ी – नर्मदा घाटी की गाय अधिक दूध देती है।

★ कांकरेज – गुजरात की विशालकाय गाय अत्यधिक दूध और मजबूत बैल।

★ थरपारकर – कच्छ राजस्थान के रण की गाय अत्याधिक दूध और मजबूत बैल देती है।

★ गौलव – नागपुर, वर्धा के आसपास मध्यम कद और शक्तिशाली।

★ हरियाणा गाय – दिल्ली से मथुरा तक फैली हुई है अत्याधिक दूध और

मजबूत बैल देती है।

★ हंसी हरियाणा – मजबूत बैल देती है।

★ ओंगोल – तमिलनाडु की प्रख्यात गाय।

★ रांठी – राजस्थान मध्यम कद की, दुधारु गाय।

★ शाहीवाल – पंजाब।

★ सीरी – हिमालय के पहाड़ी क्षेत्र की गाय कद में छोटी है पर अत्यधिक दूध देती है

बैल :

★ मैसूर की लंबे सींग वाली गाय।

★ अमृतमहल गाय श्रेष्ठ बैल देती है, मैसूर के महाराजा तोपों को खींचने के लिए अमृतमहल बैलों का बड़ा काफिला रखते थे।

★ कंगायम – दक्षिण भारत में बैलों के लिए प्रख्यात।

★ खिलारी – तापी घाटी में महाराष्ट्र में।

★ बारगुर – मद्रास में कोयंबटूर के निकट दौड़ने में तेज बैल देती है।

★ आलमबादी – मद्रास के पास चपल और मजबूत बैल।

★ डांगी – डांग, अमहदनगर, नासिक, धरमपुर, वासंदा कद में छोटी, दूध कम देती है मगर चावल के खेतों में बिना थके काम करनेवाले बैल देती है।

★ मालवी – मालवा और मध्यप्रदेश, आंध्र बहुत भारी न हो ऐसी गाड़ियों को खींचने वाले बैल देती है।

★ नागोर – जोधपुर के उत्तर-पूर्वी हिस्से में होनेवाली यह गाय तेज़ गति से दौड़ने वाले बैल देने हेतु प्रख्यात है।

★ बचौर – बिहार।

★ पोणवार - केनवारिया, खेरगढ़ी – उत्तर प्रदेश।

★ धणनी रोझाण – पंजाब

१८. गाय के प्रति शहरी नागरिकों का कर्तव्य :

★ पहली रोटी और भोजन का पहला हिस्सा गाय के लिए अवश्य रखें।

★ रसोई में प्रयुक्त होनेवाली सब्जी, चाय की पत्ती, बची हुई रोटी, दाल-सब्जी आदि गाय को अवश्य दें।

★ संभव है तो एक गाय अवश्य पालें उसका नाम रखें और उसकी घर के सदस्य की तरह देखभाल करें।

★ देशी गाय के दूध-घी और इसके पंचगव्य में से बनी दवाइयाँ प्रयोग करने का आग्रह रखें।

★ शादी-ब्याह में बची शेष सामग्री फेंकने की बजाय गौशाला में भेज दें।

★ मंगल अवसरों पर गोमाता के लिए मंगल निधि निकालें ।

★ गाय सेवा हेतु निकलनेवाली पत्र-पत्रिकाओं और साहित्य को अवश्य मँगाया जाना चाहिए।

★ घर के बाहर गायों के लिए पानी का कुंट रखें, उसको साफ रखें और पानी में एक मुट्ठी नमक अवश्य डालें।

★ गाय का खाना प्लास्टिक की थैली में न दें, गो-विज्ञान स्वयं जानिए और सभी को उसके लिए प्रोत्साहित करें ।

★ गाय को असहाय स्थिति में देख, अनदेखा न करें। किसी सुरक्षित जगह पर पहुँचा दें खुद की आय में से गाय का हिस्सा अलग निकालें बच्चों को भी गुल्लक दें और गाय के लिए बचत करने को कहें।

★ शिक्षा-पाठ्यक्रमों में गाय का विषय जोड़ने के लिए होनेवाले प्रयासों में साथ दें।

१९. गाय के लिए कौन क्या कर सकता है?

सब लोग सब कुछ कर नहीं सकते यदि सब लोग सब कुछ करने लगे तो शुभंकर बन जाएँ इसके बाबजूद समाज से जुड़े कार्यों में सभी का योगदान जरूरी है। सदियों से विभिन्न रूप में हमारे काम आनेवाले गोवंश के लिए हम क्या कर सकते हैं?

★ गो प्रेमी यदि संपन्न हों तो गोवंश की सेवा हेतु पुस्तक तैयार करवाएँ, छपवाएँ या पूर्व प्रकाशित गोवंश संबंधित अच्छी पुस्तक भेंट दें।

★ गोवंश उत्पादित वस्तुओं का ही इस्तेमाल करें।

★ दुग्ध-उत्पादक पशुपालकों को पर्याप्त मात्रा में घास चारें के लिए पैसों की मदद करें या तो बिना ब्याज के लोन दें।

★ स्वयं के समय और शक्ति का लाभ नज़दीक की गौशाला या पांजरापोल को दें।

★ किसानों को सामूहिक प्रयासों का महत्त्व समझाइए।

★ दातागण पांजरापोल या गौशाला को नगद दान देने की बजाय संस्था के लिए आवश्यक निर्माण कराएँ तालाब, कुआँ, बावड़ी, डीप सिंचाई, उपयोगी साधन, बायोगैस प्लांट, सौरऊर्जा प्लांट आदि के लिए सहायता देने की परंपरा गढ़ें।

★ भटकते पशु वाहनों के लिए समस्या होते हैं परंतु उसे पकड़ना और नजदीक की गौशाला या पांजरापोल में पहुँचाना कठिन होता है इसकी व्यवस्था में सहायक बना जा सकता है।

★ यांत्रिक या रासायनिक खेती से होनेवाले खर्च के साथ ही अन्य दुष्परिणाम की जानकारी तथा गौवंश से होनेवाली जैविक खेती लाभ व अन्य गौवंशी उत्पादनों की वैज्ञानिक जानकारी और व्यावहारिक सूचना के साथ ही कृषिविदों या प्रयोगशील किसानों द्वारा किये गए संशोधन आदि की अद्यतन जानकारी रसप्रद स्वरूप में निरंतर मिलती रहे। ऐसे प्रकाशन, प्रवचन आदि की व्यवस्था सरकार या सक्षम स्वैच्छिक संस्थाओं के द्वारा होती रहनी चाहिए।

★ इस बारे में शिबिरों एवं परिषदों का आयोजन समय-समय पर होना चाहिए।

२०. गाय के बारे में बच्चों को क्या बताएँ?

★ गाय का अर्थ भारतीय जाति की देशी गाय से है संकर जाति की गाय जैसे कि जर्सी, होलिस्टन, नील गाय आदि को गाय नहीं कह सकते क्योंकि इन सभी का उपयोग कृत्रिम दूध उत्पादन के लिए होता है।

★ गाय की कूबड़ में सूर्यकेतु नाड़ी होती है। यह सूर्य के प्रकाश से जागृत होती हैं। इसमें से निकलने वाले पीले द्रव्य के दूध में मिलने से दूध पीनेवालों की इम्युनिटी बढ़ती है।

★ पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह के शासन में गोहत्या करने पर मृत्युदंड दिया जाता था।

★ दुनिया के कुछ देशों ने ट्रैक्टर छोड़ बैलों से होनेवाली खेती शुरू की है।

★ भारतीय संस्कृति के केंद्रबिंदु में गाय का स्थान महत्त्वपूर्ण था इसलिए विदेशी शासकों ने मंदिर तोड़ने के साथ-साथ गायों का भी संहार किया था।

★ माँ के दूध के बाद श्रेष्ठ आहार गाय का दूध है इसके गुणों का वर्णन चरकसंहिता में है माँ के दूध में १.२... प्रोटीन होता है, गाय के दूध मे ३.३... प्रोटीन होता है माँ के दूध में ३.४... चर्बी होती है और गाय के दूध में ४.१... चर्बी होती है माँ के दूध में पानी की मात्रा ९९.९... होती है, गाय के दूध में ९७... होती है माँ के दूध में ७... शर्करा होती है और गाय के दूध में ५..., माँ के दूध में ६५... कैलरी होती है जबकि गाय के दूध में ६७... कैलरी होती है गाय के दूध में विटामिन और खनिज़ का प्रमाण भी अच्छा होता है।

★ दस साल बाद गाय के घी को पुराना कहते हैं १११ साल पुराने घी को कुंभसर्पी और १११ साल में अधिक पुराने घी को महासर्पी कहा जाता है।

★ घाव को भरने के लिए उसमें गाय के पुराने घी में भिगोई रूई की बाती को रखा जाता है गाय के पुराने घी से सिर दर्द, कान का दर्द, बुखार, मूर्छा और कृत्रिम जहर का प्रभाव दूर होता है।

★ घर में जहाँ गोबर की लिपाई होती है वहाँ परमाणु के विकिरणों का दुष्प्रभाव नहीं दिखता है।

★ गोबर गैस प्लांट से बने गैस से ईंधन, प्रकाश और विद्युत निर्माण होता है गैस बनने के बाद बचा हुआ पदार्थ जैविक खाद के रूप में काम में आता है। गाय के ताज़े गोबर को कपड़े से छानकर, निचोड़कर जो मिलता है उसे गोमय कहते हैं गौरी भगवती की मूर्ति गाय के गोबर में से बनाई जाती है।

★ गोबर और गौमूत्र में से ३० से ५० तरह की दवाइयाँ बनाई जाती हैं इससे कैंसर, दिल की बीमारी, गुर्दे की बीमारी, क्षय और पेट की सभी बीमारियों का ईलाज होता हैं।

★ लालसिंधी, राठी, साहिवाल और गीर प्रजाति की गाय ज्यादा दूध देने के लिए प्रसिद्ध है।

२१. गौ-विज्ञान : पुनर्जीवित होती भारतीय विद्या

सदियों से गाय को हम माता मानते आए हैं। गाय के कामधेनु स्वरूप को स्वयं ईश्वर ने अपना स्वरूप माना है हमारे शास्त्र गायों को जीवन के एक अभिन्न हिस्से की तरह देखते हैं।

गौ-विज्ञान अर्थात आयुर्वेद एक विशिष्ट विद्याशाखा है, जिसमें गौदुग्ध, गौमूत्र, गोमय, गोबर और गोघृत चिकित्सा के संदर्भ में कई उपयोगी और सटीक संशोधन हुए हैं। वैद्यकशास्त्र के आधार पर यदि इसकी उपयोगिता के विषय में लिखने बैठें तो बड़ा ग्रंथ तैयार हो जाएगा इसके अलावा कृषि, शरीर सुरक्षा, स्वच्छता व्यापार आदि मुद्दों पर भी सोचें तो गाय की उपयोगिता को समझ सकते है मृत्यु के बाद गाय हमें गोचरण जैसा व्याधिनाशक अमृत देवी है। हमे अपने पूर्वजों का उपकार मानना चाहिए कि उन्होंने गाय को इस तरह समझा और यह ज्ञान हमें देते गए इस ज्ञान को हम भूल न जाएँ इसलिए धर्म के साथ इसका संयोजन करके दिया।

हमारे इसी देश में आज गायों का कत्ल हो रहा है। परंतु अब धीरे-धीरे आहार, पोषण, स्वास्थ्य, चिकित्सा, कृषि, ऊर्जा और पर्यावरण सुरक्षा के

संबंध में गाय की सर्वोपरिता स्थापित करने के प्रयास हो रहे हैं। इतना ही नहीं स्वास्थ्य और चिकित्सा के संदर्भ में पश्चिम भी आकर्षित हुआ है।

गाय का दूध :

यक्ष धर्मराज युधिष्ठिर को पूछता है कि पृथ्वी पर अमृत कौन सा है? तब युधिष्ठिर उत्तर देते है कि दूध सभी दूध में माँ का दूध श्रेष्ठ है और माँ के दूध के बाद गाय का दूध श्रेष्ठ है। गाय का दूध मीठा, स्निग्ध, बल और कांति देनेवाला, पुष्टिकर, वीर्यवर्धक और अनेक रोगों का नाश करनेवाला है इसे गरम करने के बाद थंडा करके पीना चाहिए।

गाय का दही :

गाय का दही सादा, बल बढ़ानेवाला, रुचिकर, तेजस्वी, पौष्टिक, दाहक, थंडा और बात का नाशक है। दही मंद, स्वादु, स्वादम्ल, खट्टा, अति खट्टा ऐसे पाँच प्रकार का होता है। सभी के अपने-अपने गुण एवं प्रभाव हैं साथ ही इससे अनेक रोगों का नाश होता है। दही शहद और मक्खन तीन-तीन तोला और पीपर, अदरक, वज, सिंध वेताल चूर्ण तीन तोला लेकर साँप कटे हुए व्यक्ति को तीन बार पिलाने से साँप का ज़हर उतर जाता है। छाने हुए दही से सूजन और जलन ठीक होती है।

गाय का मक्खन :

गाय का मक्खन शीतल, धातुवर्धक, कांति बढ़ानेवाला, ग्राह्य, बलप्रद, बच्चों और बूढ़ों के लिए रुचिकर, मधुर, आँखों को तेज़ बढ़ानेवाला, पुष्टिकर और अनेक रोगों का नाश करनेवाला है।

गाय की छाछ :

खट्टी डकार, मुँह के छाले या रक्तपित्त में असरकारक मानी जानेवाली गाय की छाछ स्वादिष्ट, मधुर, बलप्रद, मेदहारी, कफनाशक, वातनाशक और पित्तहारी है इससे पांडुरोग, दस्त जैसे अनेक रोग दूर होते हैं मक्खन निकाली हुई गाढ़ी, पतली, खट्टी और मीठी हर तरह की छाछ के अलग-अलग गुण हैं।

गाय का घी :

गाय का घी सुस्वादु, शीतल, गुरु, जठराग्नि प्रदीप्त करनेवाला, स्निग्ध, सुगंधित, रुच्य, नेर्त्य, कांतिकारक, साथ ही बुद्धि, लालित्य, तेज और बल देनेवाला है दस वर्ष पुराना घी, सौ वर्ष पुराना घी, कौंभ (हजार साल का घी) और महाघृत (ग्यारहोंसौ वर्ष से अधिक पुराना घी) ऐसे घी के प्रकार हैं और हर तरह के घी का गुण एवं प्रभाव है चमड़ी के रोगों के लिए धोया हुआ ही घी उपयोग में लेना चाहिए और खाने में धोया हुआ घी कभी भी उपयोग में नहीं लाना चाहिए।

गौमूत्र :

गौमूत्र तीखा, कड़वा, नमकीन, गरम, तीक्ष्ण, अग्निदीपन, भेदक, पित्तल, बुद्धिदायक, मधुर, सारक और कफ, गैस, कुष्ठ, सूजन जैसे अनेक रोगों का नाश करता है।

गाय का गोबर :

गाय का गोबर दुर्गंधनाशक, शोधकसारक, बीजवर्धक, पोषक, रसवान, कांतिकर और लेपन के लिए स्निग्ध, मल आदि निकालने वाला है। इससे खुजली, अमला जैसे हठ्ठी रोग दूर होते हैं।

गोबर की राख :

गोबर की राख शोधक, रोचक, दुर्गंधनाशक, धान्यवर्धक, कृमिकीटघातक और शीतनिवारक है। चेचक में गोबर की राख कपड़े से मसलकर लगाई जाती है। जलते उपलों को पानी में थंडा कर कोयला बनाकर इसका चूर्ण बनाकर दाँत पर लगाने से दाँत के सभी रोग दूर होते हैं।

२२. गाय और काऊ

हिंदी में जिसे गाय कहते हैं, अंग्रेजी में उसे काऊ कहते हैं आज भी अधिकतर लोग गाय और काऊ को एक ही मानते हैं। परंतु जीवविज्ञान की दृष्टि में यह दोनों एक नहीं हैं। गाय और काऊ एक समान ही दिखती हैं। लेकिन उसके रूप और प्राकृतिक रचना में भेद हैं इस भेद को समझना चाहिए।

हम देखते हैं कि पूर्व की गायों को कूबड़ होती है पश्चिम की काऊ की पाठ सीधी बिना कूबड़ की होती है एशिया और अफ्रीका का पीठ पर कूबड़वाला गौवंश बोसाईडंस वर्ग में आतें है जबकि यूरोप के बिना कूबड़ के पशु बोसटोरस वर्ग में ओत हैं पूर्व के गौवंश की तुलना में पश्चिम का यह काऊ पशु अन्य तरीकों से भी भिन्न हैं।

हमारे शास्त्र कहते हैं कि कूबड़ वाले पशुओं में सूर्यकेतु नाड़ी होती है जबकि बिना कूबड़ के पशुओं में सूर्यकेतु नाड़ी नहीं होती है भारत का गौवंश कूबड़वाला है इसलिए उसका शरीर विशेष मात्रा में सूर्यशक्ति को ग्रहण करता है इससे उसके शरीर में स्वर्णपित्त बनता है जिसका अंश उसके दूध, मूत्र साथ ही गोबर में उतरता है और वह अधिकतर गुणकारी बनता है विदेशी काऊ आदि में यह गुण नहीं होते।

कूबड़वाला गौवंश अधिक समझदार और संवेदनशील होता है। इसलिए उसमें प्रेम, वफादारी जैसे गुण होते हैं । भारत की गाय मालिक का स्पर्श पहचान लेती है, मालिक परिवार के सुख-दु:ख को समझ सकती है गाय का बछड़ा झुंड में से अपनी माँ को खोज लेता है। बैल अपने मालिक के इशारों को समझता है। और आदेश का पालन करता है। यह समझ काऊवंश के पशुओं में नहीं होती। गाय सत्वगुणी जीव है, इस कारण देशी गाय के दूध-घी-दही भी सत्वगुणी हैं जर्सी-एच. एफ.आदि काऊवंश के पशु जड़बुद्धि होने से उसके दूध में भी जड़त्व का गुण विशेष है।

गाय और काऊ की शारीरिक रचना में कूबड़ के अलावा भी असमानताएँ हैं। दोनों की आवाज में फर्क है दोनों के कानों के आकार में, चेहरों में, आंतरिक अंगों की रचनाओं में भी अंतर है काऊ की आँते छोटी

होती है छोटी आँत वाले पशु कम समय में ज्यादा भोजन खाते हैं और इनका दूध पचने में भारी और अल्पगुणी होता है। गाय की आँतें लंबी होने से वह कम खाकर महत्तम दूध देती है काऊ को पसीना कम आता है और गाय को पसीना ज्यादा आता है। ऐसा होने से शरीर में रही अशुद्धि, जहरीले रसायन बाहर निकल जाते हैं और इसलिए इसका दूध शुद्ध होता है। काऊ के शरीर में ऐसा नहीं होता उसके शरीर में रह रहे हानिकारक तत्व दूध में घुले ही रहते हैं।

इसप्रकार से गाय और काऊ भिन्न वर्गों के पशु हैं। गाय को काऊ और काऊ को गाय समझना अज्ञानता है। मात्र दूध देने से और क्रॉस ब्रीडिंग होने से दोनों पशु एक ही वर्ग के नहीं होते। काऊ के दूध को गाय का दूध, इसके मूत्र को गौमूत्र और इसके गोबर को गाय का गोबर समझने की भूल ना करें।

जर्सी गाय मूल रूप से आयरलैंड है और एच. एफ. होलस्टिन हॉलैंड देश की गाय है इन देशों की गर्मियाँ हमारी सर्दियों से भी ज्यादा थंडी होती हैं। यह पशु यहाँ के वातावरण में बीमार हो जाते हैं। हमारा गौवंश यहाँ की आबोहवा का आदि होता है। अत: उनको अपने स्वार्थ हेतु यहाँ लाना और पालना तथा यहाँ की गायों को वहाँ ले जाना और पालना यह अयोग्य और अप्राकृतिक है।

हमारा यह कृषिप्रधान मुल्क, जिसमें सात लाख देहात हैं, वह यंत्रयुग से बच नहीं सकता. लेकिन समझना चाहिए कि इसमें जो जीवंत यंत्र हैं; उनको बचाकर की हम देश को बचा सकते हैं. वे यंत्र हैं, गायमाता और उसका वंश तथा मानववंश. जिनके पास ऐसे चेतनमय यंत्र पडे हैं, जो हमेशा वृध्दि कर सकते हैं, मनुष्य अगर जड यंत्रयुग का पूजारी बनते हैं, तो उन पर दुनिया का शाप उतरनेवाला है। जिस देश में ३३ करोड जीवंत यंत्र पड़े हैं; वह देश यंत्रयुग का पूजारी बनेगा तो समझना होगा कि हम राम के नहीं, रावण के वंशज हैं ! यह वचन यद्यपि कठोर लगेगा, लेकिन ये हृदय के प्रेम के उदगार हैं. आज नहीं, मेरी मृत्यु के बाद आप याद करेंगे कि यह शख्स जो कहता था, सही कहता था।

- गांधीजी

२३. गाय को समझें

गौशाला के कर्मचारियों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे गाय के बर्ताव को समझें इसके लिए निम्नलिखित मुद्दों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

★ गाय अपनी पाँचों इंद्रियों का उपयोग कर सकती है। इंद्रियों के द्वारा सामनेवाले व्यक्ति को पहचानना उसकी विशेषता है। यदि कोई उसके सामने से आता है। तो वह उसके सबसे ज्यादा अनुकूल है ऐसे में वो सिर झुकाकर सामनेवाली व्यक्ति को देखने का प्रयास करती है। परंतु यदि कोई इसकी जगह गाय के शरीर के बगल से उसके नज़दीक आने का प्रयास करता है तो यह उसे पसंद नहीं आता लेकिन वह घबराती या विचलित नहीं होती है।

★ गाय को उजाला पसंद है। इसे प्रकाशवाली जगह पर रहना अच्छा लगता है। यदि इसे अंधेरे में रखा जाए तो उजाले की ओर जाने का प्रयास करती है।

★ भारी या ऊँची आवाज़ गाय को पसंद नहीं ऐसे समय में वह घबराती है या विचलित हो जाती है।

★ गाय की सूँघने की शक्ति अत्यंत तेज़ होती है। पेशाब या गोबर की दुर्गंध से दूर रहती है गौशाला में गाय को स्वच्छ जगह पर रखना चाहिए।

★ गाय सिर्फ चार तरह के स्वाद का अनुभव कर सकती है – मीठा, नमकीन, तीखा और कड़वा स्वाद को परखने की उसकी शक्ति अत्यंत तीव्र होती है।

★ अनजान आवाज़ें, अनजानी गंध या अचानक होनेवाले परिवर्तन से गाय तुरंत घबराती है।

★ दैनिक क्रियाओं को गाय सरलता से स्वीकार कर लेती हैं। परंतु यदि क्रम टूटे तो उसे घबराहट होती है। गाय की याददाश्त अत्यंत तेज़ होती है। यदि इसे जबरदस्ती या बलपूर्वक ले जाया जाए तो वह घबराती है और आधे घंटे बाद स्वस्थ होती है। इतना ही नहीं, ऐसा करने से उसकी गिरने या घायल होने की संभावना बढ़ जाती है।

★ गाय को हाँकने की आवश्यकता नहीं सही दिशा और स्वाभाविक रूप से तेज़ चलने की अनुकूलता दी जाए तो गाय व्यवस्थित चलती है। गाय एक दूसरे को पार करके आगे जाने का प्रयास कभी भी नहीं करती है।

★ खुद का शारीरिक दर्द गाय खुलकर व्यक्त नहीं करती। गाय को जब पीड़ा हो तब गोपालक गाय की तकलीफों को गाय की तरह समझें यह ज़रूरी है।

(अ) सिर नीचे रख देती है पूँछ को पिछले दो पैरों के बीच बाँध देती हैं या पिछले पैरों से चलती है।

(ब) जिस हिस्से में दर्द होता है उस हिस्से को ज़मीन से ऊपर रखने का प्रयास करती है।

(क) जब गाय को आनेवाले खतरे की भनक लग जाती है तब वह विचित्र आवाज़ें निकालकर अन्य गाय और गोपालक को सावधान करती है।

(ड) असहय वेदना के दौरान गाय पैरों को पछाड़ती है और पूँछ जोर से हिलाती है।

(ई) जबड़ों को हिलाना, दाँत हिलाना या भोजन कम करना जैसी क्रियाएँ करती है।

★ यदि गाय बीमार हो या अकुलाई हो या तो गौशाला में क्षमता से अधिक गायों को भरा गया हो तो गाय बार-बार जीभ बाहर निकालती है। दूसरी गाय के शरीर पर चढ़ जाती है और इंसान के लिए हमलावर बन जाती है।

★ यदि गाय को अत्याधिक चारा दिया जाए या गाय ऊब गई हो तो मूँह में से चारा गिरा देती है या तो फिर चारे को उछालती है।

★ गाय की पूँछ का हिलना बहुत सी बातों को व्यक्त करता है। जैसे कि पेशाब करते समय पूँछ को ऊपर उठाती है यदि वह आसपास के वातावरण से भयभीत हो तो पूँछ को पैरों के बीच में दबाती है। मासिक स्राव के समय बार-बार पूँछ ऊपर उठाती रहती है। शरीर से धूल हटाने या मक्खी या अन्य जंतुओं को उड़ाने के लिए भी पूँछ का उपयोग करती है पूँछ को घुमाकर नाराजगी भी जताती है।

★ गौशाला में हर गाय को पर्याप्त जगह मिलना आवश्यक है। नई आनेवाली

गाय २४ से ७२ घंटों में समायोजित हो जाती है। गाय की उम्र एवं कद के हिसाब से गाय का झुंड अपने नायक को स्वीकार कर लेता है।।

★ गाय की स्मरणशक्ति अत्यंत तेज़ होती है। वह अपने झुंड की अन्य गायों और अपने गोपालक को पहचानने में कभी भूल नहीं करती।

★ गाय को हम जितना समझते हैं वह उससे कई ज्यादा समझदार नए संजोगों को वह तुरंत स्वीकार कर लेती है।

★ गाय अपने बछड़े की आवाज़ पहचानती है बछड़ा भी अपनी माँ को पहचानता है यदि बछड़ा मर जाए या तो अलग कर दिया जाए तो गाय बहुत रोती है आक्रंद करती है।

★ गाय रोजाना ४ से ५ घंटे ही सोती है पर खाना खाने के बाद बैठकर आराम कर लेती है।

★ यदि गाय झुंड में हो तो बहुत जल्दी नई चीज़े सीख लेती है। झुंड में रहनेवाली गाय एकांत में रहनेवाली गायों से अधिक चारा चरती है।

★ गाय का बर्ताव गोपालक के बर्ताव से सीधा जुड़ा होता है। यदि गोपालक शांत और खुशमिज़ाजी हो तो गाय भी शांत और प्रसन्न होती है और उसे सँभालना सरल होता है। परंतु यदि गोपालक नकारात्मक और गुस्सैल हो तो गाय भयभीत और अकुलाई रहती है।

★ गाय को मारना, उसकी पूँछ मरोड़ना या चिल्लाकर उसे डाँटना ऐसे नकारात्मक बर्ताव से गाय डर जाती है और दूध भी कम देती है परंतु यदि गाय के साथ सकारात्मक बर्ताव किया जाए, जैसे – सहलाना, थपथपाना, पुचकारना इत्यादि तो इससे वह तंदुरुस्त, आनंदित रहती हैं और अधिक दूध देती है।

गोपालकों को ध्यान में रखने योग्य बातें :

★ गोधन की प्रत्येक प्रवृत्ति जैसे कि गाय दुहना, दवाई देना, इलाज करना आदि यह सब नियमित रूप से करने से गाय शांत रहती है।

★ इन गतिविधियों में यदि कोई भी फेरबदल होगा तो इसे स्वीकारने में गाय को वक्त लगेगा।

★ गाय को यदि प्यार से सहलाया जाए या पुचकारा जाए तो वह सकारात्मक परिणाम देती है।

★ गाय को यदि प्यार से सहलाया जाए या पुचकारा जाए तो वह सकारात्मक परिणाम देती है।

★ गोधन के आसपास शोरगुल न हो इसका खास ध्यान रखना चाहिए।

★ दोहते समय सँभालकर और स्नेहपूर्वक दोहन करें।

★ गाय के सामने लगातार नहीं देखना चाहिए।

★ गाय को अकेली हाँकने की बजाय हो सके तो उसे झुंड में ही हाँकना चाहिए।

★ गोपालक को हर एक गाय की विशेष जानकारी होनी चाहिए।

★ गाय के बर्ताव में छोटा-मोटा परिवर्तन आए तो गोपालक ले ध्यान में तुरंत आना चाहिए।

★ गौशाला के मैनेजर को भी हर पशु की विशेष जानकारी होनी चाहिए।

★ हर गाय के बर्ताव, उसके आराम करने और खाने-पीने का तरीका, भोजन में उतार-चढ़ाव इन सब के साथ गाय कितना दूध देगी उसका सीधा संबंध है।

★ नया जन्मा हुआ गाय का बछड़ा पूरे झुंड में से अपनी माँ को पहचान लेता है बछड़े या बछड़ी को अपने माँ-बाप के गुण विरासत में मिलते हैं।

★ गाय में अनुकरणशक्ति अच्छी होती है खाना-पाना ही नहीं जातीय क्रिया भी गाय अन्य गायों को देखकर सीखती है।

★ कई बार गाय किन्ही कारणों से तनाव महसूस करती है तापमान का अंतर, खाने-पीने का अंतर या तो फिर रहने की जगह में अंतर आने से गाय के व्यवहार में बहुत फर्क पड़ता है। तनाव की स्थिति में गाय कम खाती है और दूध भी कम देती है।

२४. आत्मनिर्भर गौशाला

पिछले कुछ सालों में गायों और गौशालाओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है और दोनों की परिस्थिति को सुधारने के प्रयास हो रहे हैं। यह अच्छी बात है परंतु इस संदर्भ में संवेदनशील हो कर सोचने की बजाय व्यावहारिक और वैज्ञानिक तरीके से सोचना आवश्यक है।

गौशाला का समग्र कामकाज दान पर चलता है। बहुत कम ही गौशालाएँ ऐसी हैं जो दान पर निर्भर नहीं है। कभी-कभी लोगों के पास समय-समय पर दान माँगकर तो कभी-कभी कोपर्स फंड में से खर्च निकाला जाता है। समय के साथ रख-रखाव की लागत बढ़ जाती है। लेकिन कोपर्स फंड की रकम में बढ़ोतरी नहीं होती इस कारण गौशाला और इसमें रहनेवाले गौवंश की स्थिति दयनीय होती है। कहीं शेड नहीं, कहीं चारा नहीं, कहीं पशुओं के इलाज का प्रबंध नहीं तो कहीं स्टाफ की कमी है। ज्यादातर गौशालाओं में क्षमता से अधिक पशुओं को ठूँसा जाता है।

कुरुक्षेत्र की एक गौशाला में २५० गायों को शामिल करने की क्षमता है, पर इसकी जगह वहाँ ६०० गाएँ हैं। इनमें से केवल चार गाय दुधारू हैं गौशाला दान पर निर्भर है। अधिकांश गौशालाओं की यही हालत है। इस प्रणाली को स्वाभाविक रूप से स्वीकार किया जा चुका है परंतु आज के समय में इस विचारधारा को बदलना चाहिए यदि हर एक गौशाला अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास नहीं करेगी तो इसका अस्तित्व संकटग्रस्त हो जाएगा अनेक पशु निराधार हो जाएँगे।

अब समय आ गया है कि गौशालाओं को अपने पैरों पर खड़ा होना आवश्यक है इसके लिए निम्नलिखित मुद्दों को ध्यान में रखना चाहिए।

★ गाय के गोबर से गैस और बिजली उत्पादन करना।

★ गोबर और चारे के मिश्रण से खाद का उत्पादन करना।

★ गायों के पोषण और स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

★ गाय के दूध से दही, मक्खन, चीज़, पनीर आदि बनाकर मुनाफा

बढ़ाना।

★ बैल की शक्ति के द्वारा बिजली उत्पादन करना।

★ जनजागृति, धनसंग्रह का आयोजन, सरकारी सहायता आदि के लिए प्रयास करना।

अनुदान :

गौशाला के मालिकों और संचालकों द्वारा गौशाला के बारे में विवरण और जानकारी सामान्य जनता को देते रहना चाहिए। गौशाला को इससे लाभ होगा। पंचायत के सभ्य, एम.एल.ए., एम.पी., गौशाला के नियामक और विद्यार्थी इन सबको इकट्ठे होकर गौशाला के लिए कार्य सेवकों को तैयार करना और अनुदान देनेवाली गतिविधि को अपने तरीके से प्रचारित करना चाहिए रोटरी, लायंस क्लब जैसी दूसरी संस्थाओं की सहायता भी ले सकते हैं।

आज के इंटरनेट के युग में एस.एम.एस., ई-मेल, फेसबुक, व्हाट्सअप, ट्विटर के द्वारा भी गौशाला की जानकारी का प्रचार किया जा सकता है। स्कूल, कॉलेज के विद्यार्थी साथ ही साथ सामाजिक कार्यकर्ता इस कार्य में यथाशक्ति अपना योगदान दे सकते हैं।

समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति, उद्योगपति, खिलाड़ी, फ़िल्म कलाकार आदि इस कार्य से जुड़कर महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। विद्यालयों-महाविद्यालयों, रेल्वे स्टेशनों, मंदिरों-मस्जिदों आदि जगहों पर दान के लिए दानपेटी रखी जा सकती है। गौशाला का पेपरवर्क और फाइलें व्यवस्थित होनी चाहिए। गौशाला गवर्नमेंट बुक में पंजीकृत होनी चाहिए जिससे सरकारी मदद मिलने में सुविधा हो। गौशाला के संचालकों को बहुत ही सावधानी से आर्थिक व्यवहार करना चाहिए जिससे कि पैसों का व्यय न हो हिसाब-किताब अच्छे से रखना चाहिए और नोटिस बोर्ड पर लगाना चाहिए। जिससे संस्था की विश्वसनीयता बनी रहे विश्वसनीयता बनी रहेगी तो लोग मदद के लिए आएँगे।

२५. गौरक्षा के विषय में आचार्य विनोबा भावे के विचार

यूयं गावो मेद्यता कृषं चित् अश्रीर चित् कृनुथा सुप्रतीकं
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचः बृहद वो वय उच्यते सभासु

ऋग्वेद का यह श्लोक गाय की महिमा का वर्णन करता है कृषि कहते हैं – हे गायों! आप महान हैं क्योंकि आप कृषि शरीर को पौष्टिक बनाती हो आप का दूध अमृततुल्य एवं कल्याणकारी है हम आपको माता समान मानते हैं और वंदन करते हैं।

गाय का दूध कम चर्बीवाला और सुपाच्य है यदि दूध की गुणवत्ता बराबर न हो तो यह गाय का नहीं मनुष्य का दोष है सौम्य प्रेमपूर्ण देखभाल से गाय के दूध की मात्रा और गुण में बढ़ोत्तरी होती है गाय के दूध से शरीर कांतिमान और त्वचा तेजस्वी होती है।

इस तरह वेद हमें सर्व प्रथम गाय की सेवा की शिक्षा देते हैं। गाय की सेवा में ही मनुष्य का विकास है। यह भी सिखाते हैं गाय की पूजा अंधभक्ति नहीं इसमें एक शास्त्र है। एक विज्ञान है इसकी नींव उपयोगिता में निहित है। गाय की सेवा करनेवालों को यह व्यवहारिक सूत्र ध्यान में रखना चाहिए कि सेवा बिना लाभ के नहीं और लाभ बिना सेवा के नहीं।

इसलिए वेदों ने गाय की महिमा को बहुत गाया है। वेद कहते हैं कि गाय के शरीर में देवताओं का वास है। क्योंकि गाय माता है पर्वतों, शिखरों और नदी किनारों पर साधना करने में जो लाभ है। उससे अधिक लाभ गायों की सेवा में है। गाय के आश्रय स्थान को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित रखने की आज्ञा वेदों में है। जो गाय की सेवा करता है, उसे चमत्कारिक शक्ति प्राप्त होती है।

हमारे पूर्वजों ने गौसेवा को जीवन से जोड़कर दिया था। इससे जीवन सरल एवं प्रेमपूर्ण भी बना गाय हमारे परिवार का हिस्सा बनी, जीवन का हिस्सा बनी गाय और बैल ग्राम संस्कृति और ग्राम अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण हिस्से हैं । जो दूध और दूध-उत्पादों के लिए ही गाय पालते हैं, वह अज्ञानी हैं गाय और बैल की संस्कृति हमें प्रकृति के साथ जोड़े रखती है इसके बिना हमारे तन-मन

का स्वास्थ्य अपने सही अर्थों में नहीं रह सकता है।

गौरक्षा यह भारतीय समाज का तत्त्वज्ञान है, अध्यात्म है इसी तरह हम पश्चिम से एक कदम आगे हैं पश्चिम में मनुष्य की पूरी सुरक्षा है लेकिन इतनी नहीं भारत के घरों में गाय घर के सदस्य की तरह ही है लेकिन आज तो यह परंपरा केवल शब्दों में ही रह गई है कैसी विडंबना है कि हम गायों का आदर तो करते हैं लेकिन उसकी देखभाल नहीं करते पश्चिम में हमसे ज्यादा गायों को अच्छे से संभाला जाता है हम तो अब घर के सदस्यों का भी अपमान और अवज्ञा करने लगे हैं, तो गायों का क्या सम्मान करेंगे? गाय दूध देना बंद कर दे या बीमार या वृद्ध हो जाए तो हम उसे दर-दर भटकने के लिए छोड़ देते हैं।

हमारी परंपरा यह नहीं थी। हम गौवंश का महत्त्व समझते थे इसलिए इसे स्वस्थ रखते थे गाय का दूध पीते थे, बैलों से खेती करते थे, इसके मूत्र और गोबर से उत्तम जैविक खाद बनाते थे तथा इसके चमड़े और हड्डियों का भी उपयोग करते थे। परंतु इसे कत्लखानों में नहीं भेजते थे। आज इसी परंपरा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ हमें आगे बढ़ाना है। भ्रम से बाहर निकल के डेयरी के साथ-साथ अन्य पशु आधारित उद्योगों को विकसित करने में ही गौवंश और हमारा दोनों का कल्याण है ।

२६. गौरक्षा के विषय में गांधीजी के विचार

१९१७ से १९४७ तक विविध अवसरों पर गांधीजी ने गाय और गौरक्षा संबंधी अपने विचार बोलकर या तो लिखकर प्रकट किए है :

★ गौरक्षा हर हिंदू का प्रथम कर्तव्य है।

★ गायों को बचाने की गतिविधियाँ कई बार अशांति और कौमी तंगदिली में परिवर्तित हो जाती हैं इतना ही नहीं इसकी वजह से गाय बचने से ज्यादा मरती हैं।

★ गाय का मसला एक ही तरह सुलझाया जा सकता है – तपस्या के रास्ते से तपस्या अर्थात गाय की सेवा में जिंदगी खर्च कर देना हिंदू ऐसी तपस्या कर सकेंगे?

★ जो दूसरों को पाप करने से रोकना चाहते हैं पहले तो उन्हें स्वयं पापमुक्त होना होगा। हिंदू गौवंश के प्रति बहुत क्रूर हैं गाय की आज जो दशा है यह इस क्रूरता का प्रमाण है मैं जब कुपोषित हड्डियों के ढाँचे जैसे बैलों को भर का वहन करते देखता हूँ तब मेरा दिल रोता है। बैलगाड़ी वाले बैल की पूँछ मरोड़कर उसे दौड़ाते हैं उसकी काँध छिल जाती है यह हिंसा नहीं तो क्या है? गाय के शरीर में से लहू की आख़िरी बूँद भी निकाल लेने में उन्हें शर्म नहीं आती गाय का ऐसा शोषण करनेवाला और इसका दूध पीनेवाला जब गाय के हितों की बात करता है, तब मेरा दिल रोता है।

★ हमारी ज्यादातर पांजरापोलों की दशा दयनीय होती है पशुओं के लिए वरदान साबित होने की बजाय पांजरापोलों को केवल मरते पशुओं को आश्रय देने में संतुष्टि मिलती है।

★ गाय की सुरक्षा मेरा प्रिय क्षेत्र है कोई मुझसे पूछे कि हिंदू धर्म का महत्त्वपूर्ण पहलू कौन सा है तो मैं कहूँगा कि गौरक्षा।

★ गोहत्या का दोष मुस्लिमों पर डालने से पूर्व हम अपने ही देश में रहने और गौमांस खानेवाले अंग्रेजों के खिलाफ क्यों कुछ नहीं बोलते? अपनी खुद की गौवंश के प्रति क्रूरता या लापरवाही कों क्यों नहीं दूर करते? गाय का

काम करने में उग्रता की नहीं सोचने की आवश्यकता है।

★ गाय भारत का प्रश्न है हिंदू या मुसलमान का नहीं।

★ देश के हर राज्य में गौशाला है और इसमें से अधिकांश की स्थिति दयनीय है इसका मूल कारण धन की कमी नहीं अपितु प्रशासनिक कमी ज्यादा है हमारे यहाँ दाताओं की कमी नहीं है।

★ पांजरापोल शहर में नहीं, शहर के बाहर खुले में होनी चाहिए। इसमें मात्र बीमार और बूढ़ी गाय नहीं, दुधारु गाय भी चाहिए, जिससे उसका दुश शहर में बेचकर आय की जा सके। लोग मुझे यंत्रों का विरोधी मानते हैं, पर मैं कभी उपयोगी यंत्रों का विरोध नहीं करता, डेरी उद्योग के लिए आवश्यक मशीनों का तो मैं समर्थन भी करता हूँ। पांजरापोल को दूध केंद्र बनाने के लिए कोई भी भारतीय न मिले तो किसी अंग्रेज जानकार को रोकने पर भी मुझे ऐतराज़ नहीं यदि हमारी ख़ुद की गौशाला और पांजरापोल सक्षम दूध केंद्र बने और स्वावलंबी बने तो लोगों को दूध, मक्खन और घी कम दामों में उपलब्ध होगा और गौवंश को भी इसका फायदा होगा।

★ सालों पहले मैंने हिंद स्वराज में लिखा था कि हमारी गोसंरक्षण की संस्कृति गोहत्यारी बनती जा रही है। १९१५ में मैं जब भारत आया उसके बाद मेरी यह मान्यता बदली नहीं बल्कि और दृढ़ बन गई।

★ जो लोग गाय की रक्षा का विचार करते हों उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि गाय को मुस्लिम या क्रिश्चनों के हाथों से बचाना है उन्हें अपने हाथों से भी गायों को सुरक्षित रखना है।

★ भारत की गरीबी और गाय की बेहाली के बीच नज़दीकी संबंध है। शहरवासियों को शायद भारत की गरीबी का पूर्ण रूप से पता नहीं है।

★ गायों का कत्ल और मानवहत्या एक सिक्के के दो पहलू हैं और दोनों का उपाय है – अहिंसा और विरोधी को भी जीत लेनेवाला प्रेम प्रेम की परीक्षा तपस्या है और तपस्या का अर्थ है। सहन करने की तैयारी गौरक्षा का अर्थविस्तार हर निर्बल और असहाय की रक्षा ऐसा होता है।

★ गाय को कत्लखाने में ले जाना और फिर कत्ल करनेवाले को गोहत्यारा

कहना यह तो उचित नहीं।

★ गाय को केवल कत्ल से नहीं क्रूरता एवं लापरवाही से भी सुरक्षित रखना है।

★ जब से गौरक्षा को धार्मिक कर्तव्य बनाया गया तब से तो गाय की बहाली ज्यादा बढ़ गई है अखिल भारतीय गोरक्षा सभा का ध्येय कत्ल और क्रूरता से गौवंश की रक्षा करना है। गौशाला और पांजरापोल के लिए संविधान बनाना चाहिए और इसमें पशुपालकों में जागृति लाना, बीमार और वृद्ध पशुओं को आश्रय देना, इसकी व्यवस्था करना, मृत पशुओं की चमड़ी से चीज़ें बनाने के कारखाने जिससे बीमार एवं वृद्ध पशुओं के निर्यात को प्रोत्साहन न मिले गौशाला के काम हेतु मेहनती, नीतिमान आदमी ढूँढ़ कर उसे उचित तालीम और योग्य वेतन के साथ ही घर देना अदृश्य हो रहे चारे की जाँच-पड़ताल करना और उसका विकास करना, पशुओं के ईलाज और साफ-सफाई का ध्यान रखना, दान इकट्ठा करना आदि बातों का समावेश किया जाना चाहिए।

★ डेयरी और चमड़े का कारखाना डालने की बात अधिक व्यावहारिक लगती है, परंतु जो धर्म, व्यवहार से और व्यावहारिक समस्याओं के समाधान से दूर रहता है वह धर्म जीवन से भी दूर हो जाता है धार्मिक हिंदू गायों के लिए दान करते हैं परंतु गायों की हत्या और उस पर होनेवाली क्रूरता में कमी नहीं आयी, इस पर विचार होना चाहिए गौरक्षा को धर्म कहते हैं ठीक है, पर यह भी याद रखें धर्म आर्थिक जगत, राजनीति और समाज के साथ जुड़ा ही है।

★ गौशाला और पांजरापोल का एक विज्ञान है जिसे इस विज्ञान की जानकारी न हो उसके हाथों में इसका कामकाज नहीं सौंपना चाहिए गौशाला में दूध की गुणवत्ता को जाँचने के साधन होने चाहिए। दूध का उत्पादन बढ़े इसके लिए प्रयत्न करने चाहिए। ऐसी संस्था किसी पर भी निर्भर नहीं होनी चाहिए। इसके ट्रस्टी या प्रशासक योग्य कर्मचारियों को योग्य वेतन पर रखें और विकास के लिए सदा प्रयत्नशील रहें। पशुओं के खाने की, स्वच्छता की और इलाज की पर्याप्त सुविधा का प्रबंध होना चाहिए यदि ऐसा न हो तो

गौशाला और पांजरापोल का जीवित रहना अनुपयोगी है। एक भी गाय या बैल की अकाल मृत्यु हो और उसे कत्लखानों में ले जाया जाए या उसका निर्यात किया जाए तो हमें शर्म आनी चाहिए।

★ गौशाला चलाने की तालीम देनी चाहिए गौशाला में उन विषयों की पुस्तकें होनी चाहिए और इसके संचालक को उचित वेतन के साथ ही रहने की सुविधा होनी चाहिए।

★ गौरक्षा धर्म का ही नहीं, भारत जैसे देश में तो ज्वलंत प्रश्न है कारण गाय और बैल बिना खेती नहीं हो सकती और बिना कृषि के मनुष्य जी नहीं सकता इसके अलावा गौवंश के बिना दूध मिलेगा नहीं और दूध बिना भी जीना मुश्किल हो जाता है।

★ जानवरों के स्वास्थ्य का आधार बौद्धिक परवरिश पर निर्भर करता है। यह सीखना कठिन नहीं गौरक्षा के साथ जुड़ी संस्थाओं को यह मार्गदर्शन देना चाहिए इस क्षेत्र में प्रयोग भी होने चाहिए और चमड़ा कारखानों के लिए लोगों का दुर्भाव दूर होना चाहिए।

★ **गायों के वध को रोकने के लिए सरकार क्या कर सकती है?**

१. मवेशी खरीदने का सरकार का स्वामित्व होना चाहिए।

२. सरकार को कम क़ीमतों में दूध की बिक्री करनेवाली डेरियाँ चलाई जानी चाहिए।

३.चमड़ा कारखानों में मृत पशु के देह का योग्य उपयोग किया जाए इसलिए ऐसे कारखानों का स्वामित्व सरकार के हाथों में होना चाहिए।

४.सरकार को एक मॉडेल गौशाला और पांजरापोल को चलाकर लोगों के सक्षम उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

५. इससे संबंधित सरल और असरकारक नीतियाँ बनानी चाहिए।

★ दूध के अलावा गौमूत्र और गोबर भी बहुत उपयोगी है कई गौशालाएँ इसे फेंक देती हैं ऐसा न करते हुए इसका उपयोग खाद, विविध औषधियों और

गोबर गैस बनाने में किया जाना चाहिए।

★ गौवंश के अलावा अन्य पशुओं के लिए भी आश्रयधाम खुलने चाहिए गांधीजी कहते थे कि आश्रय की आवश्यकता हर पशुओं को है, पर हम तो गाय जैसे उपयोगी पशु को भी नहीं सँभालते हैं उपयोगी पशुओं की भी अवदशा करेंगे तो अन्य पशुओं के प्रति करुणा कहाँ से रखेंगे?

★ शाकाहार को अपनाना चाहिए।

★ गाय की समस्या को मानवतावादी, अर्थशास्त्री, राजनेता, कौमवादी हर कोई अलग-अलग तरीके से देखता है संस्थाओं को इसे कोई रंग दिए बिना गाय की सुरक्षा करनी चाहिए।

★ गाय के गोबर का यदि उत्तम उपयोग करना हो तो इसे ईंधन के रूप में नहीं बल्कि खाद के रूप में उपयोग करना चाहिए।

★ दूध नही देनेवाली गाय मूत्र और गोबर तो देती ही है जो इसके वैकल्पिक उपयोगों को नहीं जानते वो गाय को बेकार कहते हैं।

★ आज गौशाला और पांजरापोल ऐसे लोग चलाते हैं जिन्हें उस विषय का अनुभव और ज्ञान नहीं है इस स्थिति में आमूल परिवर्तन आना चाहिए।

नंदबाबा के घर में नौ-लाख गायें थीं ऐसा कहा जाता है नौ-लाख गायें अर्थात नौ-लाख गाय नहीं बल्कि नया लक्ष्य देनेवाली गाय असली दुधारू गाय मनुष्य को नौ तरह की संपत्ति देती है : बल, बुद्धि, आयुष्य, आरोग्य, संपत्ति, संतानें, विजय, कीर्ति और मोक्ष।

२७. प्रोजेक्ट जी.आई.आई.एस.टी.

यह प्रोजेक्ट कृषि और गोसंवर्धन से संबंधित होने के कारण इसकी संक्षिप्त जानकारी यहाँ दी गई है।

जी.आई.आई.एस.टी. अर्थात ग्लोबल इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिजिनियस सायंस एंड टेक्नोलॉजी या ग्लोबल इंस्टिट्यूट ऑफ इंडीजिनियस स्किल्स एंड ट्रेनिंग जिसके पास दस एकड़ जमीन हो वह इस प्रोजेक्ट पर अमल कर सकता है इस दस एकड़ में से पाँच एकड़ ज़मीन कृषि और गोसंवर्धन के लिए और अन्य पाँच एकड़ ज़मीन बाग़-बगीचे या संस्था के निर्माण कार्य में इस्तेमाल करनी चाहिए जिसे कुछ नया सीखने में और अपने साथ-साथ समाज की भलाई के लिए काम करने में रुचि हो उन्हें यह सीखना चाहिए इसके लिए विविध सर्टिफिकेट कोर्स होते हैं, जिसमें गोपालन, सौर ऊर्जा, कृषि, वृक्ष संवर्धन, ऋतु अनुसार फसल, आयुर्वेद आदि का समावेश होता है। इच्छुक लोग ज्यादा जानकारी के लिए जितुभाई भट्ट से : ९८२०९६९६०७ इस नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

२८. गौशालाओं की सूची

गुजरात की मुख्य गौशालाएँ : गुजरात में लगभग २०० गौशालाएँ है इसमें से मुख्य निम्नलिखित हैं :

★ श्री जलाराम मंदिर ट्रस्ट गौशाला, पालडी-कांकरेज, अहमदाबाद

★ जलाराम गौसेवा केंद्र, ता.डिसा, जि.बनासकांठा

★ श्री राधनपुर खेड़ा ढोर पांजरापोल गौशाला, ता.सामी, जि.पटना

★ श्री मानेकबा विनयविहार गौशाला, पो.अडालज, जि.गांधीनगर

★ श्री बंसी गौशाला, पो.पीराणा, अहमदाबाद

★ श्री गोपीनाथ जी गौशाला, कुंदाल, ता.बरवाला, अहमदाबाद

★ श्री स्वामीनारायण गुरुकुल विद्यापीठ, पो.चारोडी, अेसजी, राजमार्ग, अहमदाबाद

★ श्री लोकभारती ग्राम विद्यापीठ गौशाला, पो.सनोसरा, जि.भावनगर

★ श्री प्रभा हेम कामधेनु गिरिविहार ट्रस्ट गौशाला, पो.पालीताना, जि.भावनगर

★ श्री बोचासणबासी अक्षर पुरुषोत्तम मंदिर गौशाला, पो.गढ्डा, जि. भावनगर

★ श्री. मोघीबा गौशाला, पो.सिहोर जि.भावनगर

★ श्री १०८ पुरुषोत्तमलालजी गौसेवा ट्रस्ट, पो.वाडला, ता.वंथली जि.जूनागढ

★ श्रीमद् राजचंद्र गौशाला, पो.बरोलिया, ता.धरमपुर, जि.वलसाड

★ श्री वसन कोठारिया गामत गौशाला ट्रस्ट, पो.हरिधाम, सोखडा, जि.वड़ोदरा

★ श्री रामरोटी आश्रम गौशाला, गाँव कोठारिया, ता.वढवाण, जि.सुरेंद्रनगर

★ श्री कबीर आश्रम गौशाला, गाँव लींबडी, जि.सुरेंद्रनगर

★ श्री भुवनेश्वरी पीठ गौशाला, गाँव गोंडल, जि.राजकोट

★ आर्यवण विकास ट्रस्ट गौशाला, ता.तलोद, जि. साबरकांठा

★ श्री स्वामी नारायण मंदिर गौशाला, गाँव वडताल, ता.नडियाद, जि.खेडा

★ श्री सतकेवाल गौशाला, गाँव सरस, जि.आणंद

★ श्री आनंदबाबा सेवा समर्थ गौशाला, जामनगर

★ श्री ऊमिया गौशाला ट्रस्ट, पो.सिडसर, ता.जाम जोधपुर, जि.जामनगर

★ श्री वर्धमान जीवदया केंद्र, लूणी, ता.मुंद्रा, जि.कच्छ

इंटरनेट सोर्स के मुताबिक राजस्थान में ६७८, हरियाणा में १६२, महाराष्ट्र में ८४, कर्नाटक में २२, उड़ीसा में १८, आसाम में ४, बिहार में १४८, दिल्ली में १५, हिमाचल प्रदेश में २४, पंजाब में १६७ और आंध्र में २३ गौशालाएँ हैं।

इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पुस्तकें पढ़े :

★ गोमीमांसा – बेनीशंकर मुरार जी वासु

★ गौशाला (अंग्रेजी) – डॉ. संजय खन्ना, मेनका संजय गांधी

★ मीनाक्षी अवस्थी

★ गोवेद – मनसुख सुवागिया

★ गोधाम – विनुभाई गांधी

★ गाय आधारित खेती – गो कृषि ग्राम संवर्धन

★ गोवंशी विकास – विनुभाई गांधी

★ भारतीय गो दर्शन – सं.सुरेशकुमार सेन

Useful Websites :

1. A comprehensive database about cow, Gaushalas, Cow-products Etc. http://www.indincattle.com
2. Cow's milk V. buffalo's milk, Cows ghee v. buffalo ghee
   https://www.mkgandhi.org/health/diet reform/ 32 cowmilk.html
   https://www.mkgandhi.org/health/diet reform/ 32 ghee.html
3. Cow slaughter and Caw protection
   https://www.mkgandhi.org/g comunal/chap 14.htm
4. Cow Protection (Goraksha)

गाय आधारित उद्योग :

दूध (डेयरी उद्योग)

गोबर (खाद)

गौमूत्र (कीट नियंत्रक)

गोबरगैस (ऊर्जा)

बैल (कृषि, परिवहन)

पंचगव्य (औषधि)

पंचामृत : दूध, दही, शक्कर, घी, शहद

पंचगव्य : दूध, घी, दही, गौमूत्र, गोबर

गाय सब की माता है, गाय जीवनदाता है

गौवंश आधारित खेती के द्वारा रोजी-रोटी, कपड़े व मकान साथ ही दवा और जीवन आवश्यक बुनियादी जरूरते पूरी हो जाती हैं। वेदों में गाय को ऋद्रों की माता, वसुओं की पुत्री और आदित्यों की बहन कहा गया है यह हमेशा ही मानव सेवा में रत है और इसका दूध अमृततुल्य माना जाता है। गौसेवा में ही प्रभुसेवा है। गौरक्षा में ही मानवसुरक्षा है।

प्रकाशक :

मुंबई सर्वोदय मंडल

२९९, ताड़देव रोड, नाना चौक, मुंबई – ४०००००७

दूरभाष : ०२२-२३८७२०६१

ईमेल : info@mkgandhi.org / **वेबसाईट :** www.mkgandhi.org